न्यायियों

1 [1] यहोशू का देहान्त होने के बाद इस्राएलियों ने याहवे
से सवाल किया, "कनानियों के खिलाफ़ लड़ने के लिए
हमारी ओर से पहले हमला कौन बोलेगा ? [2] याहवे का
जवाब था, "यहूदा, हाँ मैंने तुम्हें जीत दे दी है।" [3] यहूदा ने
शिमोन से कहा, "कनानियों से लड़ने में मेरा साथ दो, मैं भी
तुम्हारा साथ दूँगा।" इसलिए शिमोन उसके साथ हो लिया
। [4] यहूदा ने हमला बोल दिया और परमेश्वर ने कनानियों
और परिज्जियों को उसके हाथ में कर दिया और बेज़ेक में उन
लोगों ने दस हज़ार आदमियों को हताहत किया । [5] बेज़ेक में
अदोनीबेज़ेक से लड़े और कनानियों तथा परिज्जियों दोनों
ही को मारा । [6] हालांकि अदोनीबेज़ेक जान बचाकर भागा
था, लेकिन उसे उन्हों ने पकड़ा और उसके हाथ-पाँव के अँगूठे
काट दिए। [7] अदोनीबेज़ेक ने कहा, "हाथ-पाँव के अँगूठे काटे
हुए सत्तर राजा मेरी मेंज़ के नीचे टुकड़े बीना करते थे। मैंने
जैसा किया था, वैसा ही भोग रहा हूँ। फिर उसे यरूशलेम ले
जाया गया, जहाँ वह मर गया । [8] यहूदी लोगों ने लड़ाई लड़ी
और यरूशलेम पर जीत हासिल कर ली। वहाँ रहने वालों
को उन्हों ने जान से मारने के बाद नगर में आग लगा दी ।
[9] फिर वे पहाड़ी, दक्षिण और नीचे के हिस्से में रहने वाले
कनानियों से युध्द करने आए। [10] यहूदा ने हेब्रोन में रहने वाले
कनानियों पर हमला किया और शेशै, अहीमन तथा तलमै
की जान ले ली। [11] फिर दबीर पर चढ़ाई की [12] तब कालेब
बोला, "जो व्यक्ति किर्यत्सेपेर को मारकर ले ले, उसे मैं अपनी
बेटी अकसा ब्याह दूँगा। [13] कालेब का छोटा भाई ऐसा कर
सका, इसलिए अकसा से उसका ब्याह हो गया। [14] उसके पति
ओत्नीएल ने अकसा को कहा कि वह अपने पिता से जायदाद
मांगे [15] अकसा ने पिता से माँग की, कि वह उसे दक्षिणी हिस्से
के साथ ही पानी के सोते भी दे। कालेब ने उसे ऊपर और नीचे
भाग के सोते दे दिए। [16] मूसा के साले, एक के साथ खजूर वाले
नगर से यहूदा के जंगल में गए और वही इस्राएलियों के साथ
रहने लगे [17] इसके बाद यहूदा अपने भाई शिमोन के साथ
सपत गया, जहाँ के कनानियों को उन्हों ने मारा और नगर को
बर्बाद कर डाला इसीलिए उस नगर का नाम होर्मा रखा गया।
[18] यहूदा ने आस-पास की ज़मीन सहित अज्जा, अशकलोन,
और एक्रोन पर कब्ज़ा कर लिया। [19] याहवे के सहयोग से उस
ने पहाड़ी देश के लोगों को बाहर कर दिया। तराई के इलाके
के लोगों के पास लोहे के रथ होने के कारण उन्हें हराया न जा
सका। [20] मूसा के आदेश के मुताबिक कालेब को हेब्रोन सुपुर्द
कर दिया। वहाँ उस ने अनाक के तीन बेटों को भगा दिया।
[21] बिन्यामीनियों ने यरूशलेम में रहने वाले यबूसियों को न
निकाला। इसलिए वे वहाँ पर बिन्यामीनियों के साथ ही बसे
रहे। [22] यूसुफ़ के लोगों ने बेतेल पर हमला कर दिया। याहवे
की मदद उन्हें मिली हुयी थी [23] यूसुफ़ के घराने ने बेतेल की
जासूसी करने के लिए लोग भेजे। [24] और पहरेदारों ने एक
आदमी को उस नगर के बाहर आते देख उस से पूछा, "नगर
के भीतर जाने का रास्ता हमें बता दो। हमारी दया तुम पर
बनी रहेगी।" [25] उस से जानकारी पाने के बाद वे नगर में गए
और वहाँ के लोगों को मौत के घाट उतार दिया। लेकिन जिस
आदमी ने उनकी मदद की थी, उसे परिवार सहित छोड़ दिया।
[26] हित्तियों के देश में जाकर उस आदमी ने लूज़ नामक देश
बसा दिया। [27] मनश्शे ने अपने-अपने गाँवों सहित बेतशान,
तानाक, दोर, यिबलाम और मगिद्दो में रहने वालों को नहीं
निकाला। इसलिए उस देश में कनानी बने रहे। [28] इस्राएलियों
के शक्तिशाली हो जाने पर वे कनानियों से बेगारी करवाने
लगे। उनको उन्हों ने पूरी तरह से निकाला नहीं। [29] गेज़ेर में
रहने वाले कनानियों को एप्रैम ने बाहर न किया। इसलिए
वे वहीं बसे रहे। [30] जबूलून ने कित्रोन और नहलोल के
निवासियों को न निकाला, इसलिए कनानी वहीं पनपते रहे।
वे इन्हीं के कब्जे़ में भी हो गए। [31] आशेर ने अक्को, सीदोन,
अहलाब, अकजीब, हेवला, अपीक और रहोब के लोगों को
नहीं निकाला। [32] इसलिए आशेरी, कनानियों के बीच रहने
लगे। [33] नप्ताली ने बेतशेमेश और बेतनात में रहने वालों को
बाहर नहीं किया और वे भी कनानियों के साथ बस गए। वहाँ
के लोगों ने उन के अधिकार को मान लिया। [34] एमोरियों ने
दानियों को पहाड़ी इलाके में खदेड़ दिया। [35] इसलिए एमोरी
हेरेस नामक पहाड़, अय्योन और शालबीम में बसे रहे। यूसुफ़
का खानदान इतना ताकतवर हो गया कि वे उनकी आधीनता
में आ गए। [36] एमोरियों के देश की सीमा अक्रब्बीम नामक
पहाड़ की चढ़ाई से शुरू करके ऊपर की तरफ़ थी।

2 [1] याहवे का दूत गिलगाल से बोकीम गया और कहने
लगा, "मिस्र की गुलामी से मैने तुम्हें आज़ाद किया और
वायदा किए हुए देश में पहुँचा दिया। मेरा वायदा यही था कि
मैं अपनी कही बात को बदलूँगा नहीं । [2] इसलिए तुम लोग
यहाँ के लोगों को कोई वचन देकर बन्ध नहीं जाना। और
उनकी वेदियों को तोड़ डालना। लेकिन तुम ने इसके विपरीत

ही किया। 3 इसलिए "उन्हें मैं तुम्हारे देखते निकालूँगा नहीं
और वे तुम्हारे सीने में काँटे और उन के देवता एक जाल बन
जाएँगे।" 4 याहवे के दूत की इन बातों को सुनकर लोग ऊँची
आवाज़ में रोने लगे। 5 उस जगह का नाम उन्हों ने बोकीम रख
दिया। उन लोगों ने वहीं कुर्बानी भी चढ़ायी। 6 इसके बाद
यहोशू को वापस भेज दिया। इस्राएली अपनी अपनी ज़मीन
को ले लेने के लिए चले गए। 7 यहोशू के जीवन काल और
मौत के बाद और दूसरे बुज़ुर्गो के जीवन काल में जो यहोशू के
मरने के बाद ज़िन्दा रहे थे, प्रभु के बड़े कामों को देखा था। इन
समयो में इस्राएली लोग परमेश्वर के भय ही में चलते रहे।
8 एक सौ दस साल की उम्र में यहोशू चल बसा 9 उसकी लाश
को गाश नाम पहाड़ के उत्तर में दफ़ना दिया गया। 10 उसी
पीढ़ी के लोग भी धीरे-धीरे चल बसे। उस के बाद की पीढ़ी के
लोग न याहवे का ज्ञान रखते थे, न उन के किए गए कामों को
11 और ये इस्राएली परमेश्वर की इच्छा के खिलाफ़ जिन्दगी
जीने लगे। 12 वे आस-पास के देशों के देवी-देवताओं को मानने
लग गए। इसलिए परमेश्वर को बहुत गुस्सा आया। 13 याहवे
की इबादत करना छोड़कर वे बाल देवता और अश्तोरेत देवी
की इबादत करने लगे। 14 इसलिए याहवे का गुस्सा भड़क
गया। और परमेश्वर ने उन लोगों को लुटेरों के साथ सुपुर्द कर
दिया। उनको आस पास के दुश्मनों के दबाव में कर दिया।
इसलिए वे फिर हारने लगे। 15 वे लोग जहाँ जहाँ जा रहे थे,
परमेश्वर उनका नुकसान ही होने दे रहे थे इसलिए वे बड़ी
परेशानी में फंस गए। 16 फिर भी याहवे उन लोगों के लिए जज
का इन्तज़ाम करते थे, ताकि वे लुटने से बच जाएँ। 17 ये लोग
अपने जजों (न्यायियों) की भी नहीं सुनते थे। व्यभिचारित की
तरह वे लोग पराए देवताओं की स्तुति करते थे। अपने पूर्वजों
की जीवन शैली को उन्हों ने त्याग दिया। 18 जब जब याहवे
इन लोगों के लिए जज (न्यायी) को ठहराते थे, तब-तब उसके
ज़िन्दा रहने तक दुश्मनों से आज़ाद करते थे। परमेश्वर उन के
कराहने को जो शोषण और दंगो की वजह से हुआ करता था,
तरस से मर जाया करते थे। 19 जज का देहान्त हो जाने के बाद
वे फिर देवी-देवताओं की महिमा करने लगते थे। 20 इसीलिए
याहवे का क्रोध भड़क उठा और उन्हों ने कहा, "इनके पूर्वजों
से बान्धी वाचा इन लोगों ने तोड़ ली है। ये लोग मेरी बात
मानते ही नहीं हैं। इसलिए मरते तक यहोशू जिन जातियों को
छोड़ गया था, उन्हें मैं बिल्कुल नही निकालूँगा। 21 इस तरह
से मैं उनको परखूँगा, कि अपने पूर्वजों की तरह वे मेरे रास्ते
पर चलेंगे या नहीं। इसलिए याहवे ने उन लोगों को एकदम
से खदेड़ा नहीं। 22 ताकि उन के ज़रिए मैं उन्हें जाँच सकूँ कि
परमेश्वर की बात वे मानेंगे या नहीं, जिस तरह उन के पहले
बुज़ुर्ग लोग (पूर्वज) करते थे।

3 1 इस्राएली लोगों में से जितने लोगों ने युध्द में हिस्सा
नहीं लिया था, उन्हें परखने के लिए याहवे ने तमाम
जातियों को वैसे ही रहने दिया था, 2 ताकि भविष्य में जिन्हें
युध्द कौशल न हो, वे सीख लें। 3 कहने का अर्थ यह है कि पाँचों
सेनापतियों सहित पलिश्तियों, सभी कनानियों, सीदोनियों
बौर बालहेर्मोन पहाड़ से लेकर हमात की तराई तक लबानोन
पहाड़ में रहने वाले हिव्वियों को। 4 इन्हें इसलिए बाहर
निकाला नहीं गया ताकि इस्राएली आज्ञा मानने के सम्बन्ध
परखे जाँए। 5 इसलिए इस्राएली कनानियों, हित्तियों,
परिज्जियों, हिव्वियों के मध्य ही में रहे। 6 इसके साथ ही वे
आपस में ब्याह शादी करने लगे और उन के देवी-देवताओं
को पूजने लगे। 7 इस तरह इस्राएलियों ने परमेश्वर के कहने
के खिलाफ़ किया और परमेश्वर कों भूल गए। वे तमाम
देवी-देवताओं का भजन कीर्तन करने में लग गए। 8 इसलिए
प्रभु परमेश्वर को गुस्सा आया और उन लोगों को अरम्नहरैम
के राजा कूशन-रिश्आतइम के आधीन कर दिया। आठ साल
तक वे उसके आधीनता में रहे। 9 फिर इस्राएली गिड़गिड़ाए।
परमेश्वर ने उन्हें कालेब के छोटे भाई ओत्नीएल के व्दारा
आज़ाद किया। 10 याहवे के आत्मा की ताकत से वह न्यायी
बना और जब युध्द में लड़ने गया तो याहवे ने मेंसोपोटामिया
के राजा कूशनरिशातैम को उसके आधीन कर दिया। ओत्नीएल
ने उस पर जीत हासिल कर ली। 11 अगले चालीस साल
तक शन्ति बनी रही। उन्हीं समयों में ओत्नीएल चल बसा
12 इसत्राएलियों ने फिर परमेश्वर के विरोध में जीवन बिताना
आरम्भ किया परमेश्वर ने मोअब के राजा एग्लोन को उन
लोगों के ऊपर कर दिया। 13 अम्मोनियों और अमालेकियों के
साथ मिलकर उस ने इस्राएलियों को हराया और खजूर वाले
नगर पर कब्जा जमा लिया। 14 अट्ठारह साल तक इस्राएली
मोआब के राजा एग्लोन के अधिकार में रहे। 15 फिर इस्राएली
परमेश्वर के सामने गिड़गिड़ाए। परमेश्वर ने उनकी सुनकर
गेरा के बेटे एहूद से उन्हें आज़ाद करने के लिए खड़ा किया।
उसी के हाथ से इस्राएलियों ने मोआब के राजा के पास ईनाम
भेजा। 16 एहूदा अपनी जाँघ पर चोंगे नीचे हाथ भर लम्बी
दोधारी तलवार रखता था। 17 वही ईनाम को एग्लोन के पास
ले गया। 18 इनाम देने वालों को एहूदा ने वापस भेज दिया।
19 वह स्वयं गिलगाल के पास खुदी हुयी मूरतों के पास लौट
गया। उस ने एग्लोन राजा को खबर भेजी कि वह उस से कुछ
कहना चाहता है। तब राजा ने थोड़ी देर के लिए सभी को
बाहर कर दिया। 20 तब एहूद उसके पास गया। उस ने कहा,
"परमेश्वर की ओर से मेरे पास एक सूचना है। तभी एग्लोन
गद्दी से उतर गया। तभी एहूद ने तलवार निकाली और उसके
पेट पर वार कर दिया। 22 वह आर पार हो गयी। 23 एहूद

छज्जे से निकला और दरवाज़ा खींचकर ताला लगा दिया।
24 उसके जाने के बाद एग्लोन के नौकर-चाकर भीतर आए।
उन्हों ने किवाड़ में ताला लगा देखा तो अनुमान लगाया कि
वह लघुशंका के लिए गया होगा। 25 काफी इन्तज़ार के बाद
उन लोगों ने चाबी से ताला खोला और देखा कि एग्लोन मरा
पड़ा है। 26 इसी बीच एहूद भाग निकला और जाकर सेईर
में शरण ली। 27 एप्रैम के पहाड़ी इलाके में उस ने नरसिंगा
फूँका और इस्राएली उसके पीछे हो लिए 28 उस ने कहा,
"मोआबियों को प्रभु ने हमारे हाथ में दे दिया है।" तभी वे आगे
बढ़े और यरदन के घाटों को ले लिया।

4 1 एहूद के मरने के बाद इस्राएली फिर बिगड़ गए।
2 इसलिए याहवे न उन्हें कनान के बादशाह याबीन के
नीचे कर दिया। उसका सेनापति सीसरा था। 3 एस्राएलियों
ने फिर से याहवे को पुकारा। 4 बीस साल तक सीसरा
एस्राएलियों पर अन्धेर करता रहा। 5 वह एप्रैम के पहाड़ी
इलाके में रामा और बेतेल में खजूर के पेड़ के नीचे बैठ करती
थी। 6 एक दिन उस ने अबीनोअम के बेटे बाराक को बुलाया
और कहा,"क्या परमेश्वर का यह हुक्म नहीं है कि तमु ताबोर
पहाड़ पर नप्तालियों और जबूलूनियों के दस हज़ार आदमियों
को अपने साथ ले जाओ। 7 मैं सीसरा और उस के साथ के
लोगों को तुम्हारी ओर खींच लाऊँगा और तुम्हारे सुपुर्द कर
दूँगा। 8 बाराक ने उस से कहा,"यदि तुम मेरे साथ आओगी
तो मैं आऊँगा।" 9 वह बोली, "हाँ, मैं बिल्कुल चलूँगी, तब
कोई भी तुम्हारी बढ़ाई न करेगा।" तब दबोरा बाराक के साथ
केदेश गयी। 10 तब बाराक ने जबूलून और नप्ताली के लोगों
को केदेश में बुलवाया और साथ में दस हज़ार आदमी आ गए।
दबोरा भी साथ में हो ली। 11 हेबेर, केनी ने जो मूसा के साले
होबाब के वंश का था, केदेश के निकट सानन्नीम के बांझ पेड़
तक जाकर अपना डेरा डाला था। 12 सीसरा को समाचार
मिलते ही कि ओबीनोअम का बेटा बाराक ताबोर पहाड़ पर
चढ़ गया है, 13 सीसरा ने अपने नौ सौ रथों और लोगों के
हेरोशेत से कीशोन नदी पर बुलवाया। 14 तब दबोरा ने बराक
को उठने के लिए कहा। उस ने यह भी कहा कि आज जीत
का दिन है और याहवे हमारे आगे-आगे हैं। तभी बाराक तथा
उसके दस हज़ार आदमी ताबोर पहाड़ से नीचे आए। 15 तभी
सीसरा और उसके लोगों को याहवे ने घबराहट में डाल दिया
और सीसरा रथ से उतरकर भागा। 16 बारक ने उनका पीछा
किया और उनहें चुन-चुन कर मारा। और कोई भी बच न सका
याएल हेबेर केनी की पत्नी थी। 17 सीसरा याएल के डेरे की
ओर भागा। 18 तब याएल उस से मिलने बाहर आयी और
कहा, "मेरे पास आओ, डरो मत।" जब वह भीतर गया, उस ने
उसके ऊपर कम्बल डाल दिया। 19 तब सीसरा बोला," मुझे
पानी पिला दो।" उस ने उसे दूध पिला कर फिर से उढ़ा दिया।
20 सीसरा ने उस से कहा कि यदि कोई आकर कोई पूछे तो
बता देना कि यहाँ कोई नहीं है। 21 जब वह सो गया तो याएल
ने उसकी कनपटी में एक खूँटी ठोंक दी, जिसकी वजह से वह
मर गया। 22 इसी बीच बाराक उसे ढूँढते-ढूँढते आया। आएल
उस से बोली, "तुम इधर आओ, तुम जिसे ढूँढ रहे हो, उसे
मैं दिखाती हूँ।" वहाँ उस ने उसकी लाश देखी। 23 इस तरह
उस दिन कनान के राजा याबीन को इस्राएलियों के सामने
शर्मिन्दगी झेलनी पड़ी। 24 और इस्राएली कनान के राजा
याबीन से ज़्यादा ताकतवर होते गए। यहाँ तक कि उन्हों ने
याबीन को बर्बाद ही कर डाला।

5 1 उसी दिन दबोरा और बाराक ने यह गाना गाया,
2 याहवे परमेश्वर की बड़ाई करो, क्योंकि जब इस्राएल
ने अपने आप को प्रभु के हवाले किया तब परमेश्वर ने उसके
दुश्मनों से बदला लिया। 3 हे राजाओ, और अधिकारियों,
सुनो। मैं याहवे के लिए गीत गाऊँगी। इस्राएल के परमेश्वर
का मैं भजन कीर्तन करूँगी। 4 हे याहवे, जब आप सेईर से
निकले, जब आप एदोम देश से निकले, तब पृथ्वी हिल गयी
और आसमान टूट पड़ा और बारिश होने लगी 5 याहवे की
शक्ति से सीनै पहाड़ पिघलने लगा 6 अनात के बेटे शमगर के
दिनों में और याएल के दिनों में सड़कें सूनी पड़ी हुई थीं। और
पगंडडियो पर मुसाफ़िर नही दिखते थे। 7 जब तक दबोरा
ने माता की भूमिका न ली, तब तक गाँव वीरान थे। 8 लोग
नए-नए देवताओं को अपनाने लगे, उस वक्त फाटकों में लड़ाई
हुआ करती थी। क्या चालीस हज़ार इस्राएलियों में एक
के पास भी ढाल या बर्छी नहीं दिखती थी। 9 इस्राएल के
अधिकारियों की ओर जो लोग अपनी इच्छा से भरती हुए,
उनकी तरफ़ मेरा मन लगा हुआ है। वे याहवे की बड़ाई
करे। 10 हे सफेद गदहियों पर चढ़ने वालो, फर्शों पर बैठने
वालो, रास्ते पर पैदल चलने वालो, ध्यान देना। 11 पनघटों
के आस-पास धनुर्धारियों की बातचीत की वजह से, वे याहवे
के इन्साफ़ के कामों और इस्राएल में उसके फ़ौजियों अच्छे
कामों की चर्चा करेंगे। उस समय याहवे की प्रजा के लोग
फाटकों के पास गए। 12 हे दबोरा, जाग जाओ, गीत सुनाओ।
बाराक उठो, अबीनोअम के बेटे अपने कैदीयों को गुलामी
से निकाल लो। 13 तब बचे हुए लोग अमीरों के पास उतर
आए। याहवे के लोग शक्ति शाली लोगों के साथ मेरे पास
आए। 14 जिनकी जड़ अमालेक में हैं वे लोग एप्रैम से आए
थे। हे बिन्यामीन तुम्हारे पीछे तुम्हारे दलों में माकीर में से
अधिकारी और जबूलून में से सेनापति की सज़ा लिए हुए

उतरे। 15 इस्साकार के अधिकारी दबोरा के साथ हो लिए।
इस्साकार की तरह बाराक भी था। वे तुरन्त तराई में उसके
पीछे हो लिए। रूबेन की नदियों के निकट बड़े-बड़े कामों का
इरादा किया गया। 16 तुम गड़रियों को सीटी सुनने के लिए
भेड़शालों के बीच क्यों बैठे रहे? बड़े कामों के बारे में रूबेन
के कुलों में लोगों के मन टटोले गए। 17 यरदन के पास गिलाद
रह गया, जहाजों में दान क्यों रह गया? समुन्दर के किनारे
अशेर बैठा रहा और खाड़ियों के पास रह गया। 18 जबूलून के
लोगों ने अपनी जान की बाजी लगा दी। ऐसा ही नप्तालियों
ने किया। 19 राजा लड़ने आए। कनान के राजा ने मगिद्दो के
सोतों के पास आकर युध्द किया, लेकिन लूट की चाँदी उन
के हाथ न लगी। 20 आसमान के सितारो ने युध्द छेड़ दिया।
अपनी कक्षाओं ही में सीसरा से लड़े। 21 कीशोन नदी के बहाव
में वे बह चले। हे मेरे मन हिम्मत के साथ आगे बढो। 22 तब
उसके ताकतवर घोड़ों के दौड़ने से, घोड़ो की टाप की ऊँची
आवाज़ आने लगी। 23 प्रभु का दूत कहता है, "मेंरोज को और
उसके निवासियों को शाप दो, क्योंकि योध्दाओं के खिलाफ़
याहवे की मदद करने वे सामने नहीं आए।" 24 कनी हेबेर की
पत्नी याएल सब महिलाओं से बढकर है। तम्बुओं में रहने वाली
महिलाओं में से ज्यादा आशीपत वही है। 25 सीसरा के पानी
मांगे जाने पर उस ने दूध दिया था। एक खूबसूरत कटोरे में उस
ने उसे दही परोसा। 26 अपना हाल उस ने तम्बू की खूंटी और
हथौड़े की तरफ़ बढ़ाया। फिर सीसरा पर हमला बोल कर
उसका सिर फोड़ दिया तथा कनपटी को आर पार छेद दिया।
27 महिला के पैरों के बीच वह गिरा और पड़ा रहा। वहीं वह
मरा पड़ा रहा। 28 खिड़की में से एक महिला (सीसरा की माँ)
देखकर पुकार उठी, "उसके रथों के आने में देर क्यों हो रही
है ?" 29,30 उसकी बुध्दिमान राजकुमारियाँ कहती रहती हैं,
"क्या वे लूट का माल बाँट तो नहीं रहे हैं? हर एक सैनिक को
एक-एक या दो-दो कुमारियाँ, और सीसरा को रंगे हुए कपड़ों
की लूट, हाँ, कशीदा किए हुए रंगीन कपड़ों की लूट, साथ ही
लूटने वालों के गले के लिए दोनों ओर से कशीदा किए हुए
रंगीन कपड़े नहीं मिले ? 31 हे याहवे, इसी तरह से आपके
सभी दुश्मन बर्बाद हो जाएँ, लेकिन वे जो परमेश्वर का भय
मानते (प्रेम करते) हैं, वे लोग उगते हुए तेज सूरज की तरह
होंगे। इसके बाद देश में चालीस साल तक शान्ति रही।

6 1 इस्त्राएली परमेश्वर की इच्छा के विरोध में फिर से
चलने लगे। इसलिए याहवे ने उन्हें मिद्यानियों के वश में
सात साल तक कर दिया। 2 मिद्यानी लोग ज़ोरावर होते गए।
मिद्यानियों के डर से उन्हों ने पहाड़ों की खाईयों, गुफ़ाओं और
किलों को चुना कि उन में छिप जाएँ। 3 जब जब एस्त्राएली
बीज बोते थे, तभी मिद्यानी पूर्वी लोगों और अमालेकियों के
साथ आकर हमला बोल देते थे। 4 वे लोग गाज़ा तक छावनी
डालकर सारी फ़सल नाश करने के साथ, खाने की चीजों,
जानवर जैसे भेड़, बैल और गदहे आदि को भी नहीं छोड़ते थे।
5 क्योंकि वे अपने जानवरों के साथ टिड्डियों की तरह आया
करते थे और सब कुछ उजाड़ डालते थे। 6 ऐसी बुरी हालत में
इस्त्राएलियों ने याहवे को पुकारा। 7,8 इसलिए याहवे ने उन के
पास एक नबी भेजकर कहा, " मैं ही तुम्हें मिस्त्र की गुलामी से
निकालकर लाया हूँ। 9 मिस्त्रियों के चंगुल से और दुश्मनों से
तुम्हें आज़ाद करके तुम्हें उनकी ज़मीन दे दी।" 10 मैंने यह भी
कहा," मैं तुम्हारा परमेश्वर हूँ तुम एमोरियों के देवताओं को
मत पूजना। लेकिन तुम ने मेरी एक न सुनी" 11 फिर प्रभु का
दूत बांज पेड़ के नीचे बैठ गया। यह ओप्रा इलाके में अबीएजेरी
योआश का था। उस वक्त उसका बेटा गिदोन एक दाखरस के
कुण्ड में मिद्यानियों के डर से गेहूँ साफ़ कर रहा था। 12 याहवे
के दूत ने दश्थन देकर उस से कहा," हे शक्तिशाली सैनिक,
परमेश्वर तुम्हारे साथ हैं।" 13 तब गिदोन ने जवाब दिया,"हे
मेरे मालिक, यदि याहवे हमारे संग हैं, तो यह सब हमारे साथ
क्यों हुआ है ? जिन बड़े कामों के बारे में हमारे बुज़ुर्ग लोग
बताया करते थे, वे कहाँ रहे ? याहवे ने हमें छोड़ दिया है और
मिद्यानियों के कब्ज़े में कर दिया है।" 14 तब याहवे ने उस पर
नज़र डाली और कहा, "तुम्हारे पास जो ताकत है, उसी के
बल पर जाओ और इस्त्राएलियों को मिद्यानियों से मुक्ति दो।"
15 वह बोला,"हे याहवे, मैं ऐसा किस तरह से कर पाऊँगा?
मनश्शे में मेरा परिवार सब से छोटा है और मैं अपने परिवार
में सब से छोटा हूँ। 16 लेकिन याहवे ने उस से कहा, "मैं तुम्हारे
संग ज़रूर रहूँगा तुम मिद्यान को एक आदमी की तरह हरा
दोगे। 17 तब गिदोन बोला,"यदि ऐसा है तो मुझो इस बात का
कोई निशान (सबूत) दिखाईये। 18 जब तक मैं आकर अपनी
भेंट आपके सामने न रखूँ तब तक आपकी उपस्थिति बने
रहे।" वह बोला, "ठीक है। 19 तब गिदोन भीतर गया और
बकरी का एक बच्चा और एक एपा मैदे की अखमीरी रोटिया
बनायीं। गोश्त और रोटियाँ लाकर उस ने बांज पेड़ के नीचे
अर्पण किया। 20 परमेश्वर के दूत ने उस से कहा, "गोश्त और
अखमीरी रोटियाँ चट्टान पर रखो और द्रव (शोरवे या रसा)
को उस पर उण्डेल दो।" उस ने वैसा किया भी। 21 तब याहवे
के दूत ने अपने हाथ की छड़ी के सिरे से गोश्त और अखमीरी
रोटियों को छू लिया। चट्टान में से आग निकली और सारा
खाना जलकर राख हो गया। इसके तुरन्त बाद याहवे का दूत
गायब हो गया। 22 यह जानकर कि ज़रूर यह याहवे का दूत
है, गिदोन बोल उठा," हाय प्रभु याहवे, मैंने तो याहवे के
दूत को अपनी आँखों से देख लिया है।" 23 याहवे ने उस से

कहा,"तुम्हें शान्ति मिले, डरो मत, तुम मरोगे नहीं।" 24 उसी समय गिदोन ने एक वेदी बनाकर उसका नाम 'याहवे शालोम' रख दिया। 25 उसी रात को गिदोन से याहवे ने बात की,"अपने पिता का बैल, सात साल का एक और बैल लो। फिर अपने पिता की बाअल और अशेरा की वेदी को तोड़ डालो। 26 जो तरीका मैंने तुम्हें बताया है, वैसे ही अपने परमेश्वर याहवे के लिए एक वेदी बनाओ। दूसरे वाले बेल को लो और काटी हुयी अशेरा की लकड़ी से होमबलि चढ़ाओ।" 27 तब याहवे के कहने के मुताबिक अपने दस नौकरों को उस ने साथ में लिया और वैसा ही किया, जैसा उस से कहा गया था। अपने पिता के परिवार और नगर के लोगों के डर से उस ने यह सब रात ही में किया। 28 सुबह के समय लोगों ने देखा कि बाल की वेदी टूटी हुयी है, अशेरा को तोड़ डाला गया है। साथ ही एक नई वेदी पर दूसरा बैल चढ़ाया गया है। 29 आपस में लोगों में चर्चा होने लगी कि ऐसा काम किसने किया। खोजबीन के बाद पता चला कि यह योआश के बेटे गिदाने का काम है। 30 तब नगर के लोगों ने योआश से कहा कि वह अपने बेटे को घर से बाहर लाए ताकि उसे जान से मार डाला जाए, क्योंकि उस ने बाल और अशेरा का अपमान किया है। 31 योआश बोला, "क्या तुम बाल का पक्ष लोगो ? जो व्यक्ति उस का पक्ष लेगा, उसे प्रातःकाल तक अपनी जान गँवानी पड़ेगी। यदि बाअल देवता है तो वह खुद जानता होगा कि किसने ऐसा काम किया है। 32 उसी दिन गिदोन का नाम यरूब्बाल रखा गया। 33 तभी सारे मिद्यानी और अमोलेकी वहाँ इकट्ठे हुए। यिज्रेल में आकर उन्हों ने डेरे डाल दिए। 34 फिर गिदोन पर याहवे का आत्मा उतरा और उस ने नरसिंगा फूँककर अबीएज़री लोगों को अपने साथ होने के लिए कहा। 35 फिर उस ने मनश्शे में दूत भेजे और वे उस से मिलने आए। 36 तब गिदोन परमेश्वर से बोला, "यदि अपने कहने के अनुसार आप इस्राएल को मेरे व्दारा बचाएँगे, तो मुझे सबूत चाहिए।" 37 मैं कुछ ऊन खलिहान में रखने जा रहा हूँ। यदि रात की ओस केवल ऊन पर पड़े और सारी ज़मीन सूखी रहे, तो मैं जान जाऊँगा, कि आप इस्राएलियों की जीत के लिए मुझे इस्तेमाल करेंगे।" 38 ऐसा हुआ भी। दूसरे दिन सवेरे उस ने ऊन को निचोड़ा, तो एक कटोरा पानी निकला। 39 गिदोन ने फिर से परमेश्वर को परखना चाहा और कहा,"यदि आप गुस्सा न हों, तो एक बार फिर मुझे सबूत दें। इस बार ऊन सूखा रहे ज़मीन गीली हो जाए।" 40 इस बार परमेश्वर ने ऐसा ही होने दिया। ऊन सूखा रहा और सारी ज़मीन गीली हो गयी।

7 1 तब गिदोन और उसके लोगों ने हरोद नामक सोते के पास अपने डेरे डाले। उन के उत्तर में मोरे नामक पहाड़ी के पास तराई में मिद्यानियों की छावनी थी। 2 तब याहवे ने गिदोन से कहा,"जो लोग तुम्हारे साथ हैं, उनकी गिनती इतनी है कि मैं उन के व्दारा मिद्यानियों को हरावाऊँगा नहीं। ताकि बाद में इस्राएल यह न कहने पाए, कि हमने अपनी ताकत से जीत हासिल की है। 3 इसलिए अब तुम जाओ और एलान कर दो," जो कोई डरपोक है, वह गिलाद पहाड़ पर चला जाए।" इसलिए बाईस हज़ार लोग वापस चले गए, केवल दस हज़ार लोग रह गए। 4 तब याहवे गिदोन से बोले,"लोगों की संख्या अभी भी अधिक है, तुम उन्हें सोते के पास ले जाओ, वहीं उनको परखा जाएगा। मैं जिनकी मंजूरी दूँ, वही तुम्हारे साथ जाने पाएँ। 5 इसलिए वह लोगों को सोते के पास ले गया। याहवे ने गिदोन से कहा,"हर एक जो कुत्ते की तरह चपड़-चपड़ करके पानी पीता है, उसे अलग रखना। उन लोगों को भी जो घुटने टेककर पानी पीते है। 6 जिन लोगों ने मुँह में हाथ लगाकर चपड़ - चपड़ करते हुए पानी पिया, वे संख्या में तीन सौ थे। बाकी लोगों ने पानी पीने के लिए घुटने टेके थे। 7 गिदोन से याहवे ने कहा,"मैं तुम्हें इन तीन सौ चपड़-चपड़ करने वालों से जीत दिलवाऊँगा, इसलिए बाकी लोग वापस चले जाएँ।" 8 इसलिए तीन सौ लोगों ने तैयारी की और हाथ में नरसिंगे लिए। 9 उसी रात याहवे ने कहा,"उठो नीचे जाओ और हमला बोल दो, मैंने तुम्हें जीत दे दी है। 10 लेकिन यदि तुम्हें नीचे जाने में डर लग रहा है तो अपने सेवक फूरा के साथ जाओ। 11 उनकी बातों को सुनने से तुम्हें मालूम पड़ेगा कि उनकी क्या बातचीत हो रही है; तब उन पर हमला करने के लिए तुम्हारी हिम्मत बढ़ेगी।" इसलिए वह फूरा के साथ वहाँ पहुँचा। 12 मिद्यानी और अमोलेकी और पूर्व के लोग टिड्डियों की तरह फैले हुए थे। उन के ऊँट भी अनगिनित थे। 13 गिदोन के वहाँ पहुँचने पर एक आदमी अपने दोस्त को अपना सपना बतला रहा था। वह कह रहा था, " मेरे सपने में एक रोटी लुढ़कते हुए मिद्यान की छावनी में आई और तम्बू को टक्कर मारी। वह तम्बू इस कारणवश गिर गया।" 14 उसका दोस्त बोला," यह योआश के बेटे गिदोन के अलावा और कोई नहीं हो सकता। परमेश्वर ने मिद्यान और सारी छावनी को उसके सुपुर्द कर दिया है। 15 गिदोन ने सपने और उसके अर्थ को सुनकर परमेश्वर की बड़ाई की और इस्राएल की छावनी में जाकर वहा," सब लोग उठ जाओ, क्योंकि हमने दुश्मन को जीत लिया है।" 16 तब उस ने तीन सौ लोगों को तीन हिस्सों में बाँट दिया। सभी के हाथों में उस ने एक एक नरसिंगा, खाली घड़ा और घड़े में मशाल दी। 17 उस ने उस से कहा कि वे सभी उसे देखते रहें और वह जैसा कहे, वैसा ही किया जाए। 18 यह भी कि उसके और उसके साथियों के नरसिंगा फूँकते ही वे लोग छावनी के चारों ओर नरसिंगा फूँक और ललकार कर

कहें "याहवे के लिए, गिदोन के लिए।" 19 बीच रात में जैसे ही सैनिक पहरेदार बदले, तभी गिदोन और उसके साथ के 20 लोग छावनी की सरहद तक पहुँचे। वहाँ पहुँचकर उन्हों ने नरसिंगे फूँके और घड़े फोड़ दिए। 20 ऐसा करने के बाद तीनों दलों ने ज़ोर से आवाज़ की, "याहवे की तलवार और गिदोन की तलवार।" 21 इसके बाद वे सभी छावनी के चारों ओर अपनी-अपनी जगह खड़े रहे और फ़ौज के सिपाही दौड़ने लगे। इस तरह से चिल्ला-चिल्ला कर उन्हों ने लोगों को भगा दिया। 22 तीन सौ नरसिंगे फूँके गए और याहवे ने एक-एक आदमी की तलवार उसके साथी पर और पूरी सेना पर चलवायी। इस कारणवश फ़ौजी सरेरा की तरफ़ बेतशित्ता तक और तब्बात के पास के आबेलमहोला तक भाग गए। 23 तब इस्राएली आदमियों को नप्ताली और आशेर और मनश्शे से बुलाया गया। उन्हीं ने मिद्यानियों का पीछा किया। 24 गिदोन ने एप्रैम के पूरे पहाड़ी देश में यह समाचार पहुँचाने के लिए संदेशवाहक भेजे,"कि मिद्यानियों से निबटने के लिए आओ। तुम आकर यर्दन नदी के घाटों को बेतबार तक उन से पहले अपने कब्ज़े में कर लो।" 25 उन्हों ने मिद्यान के दो गवर्नरों-ओरेब और जेब को पकड़ लिया। फिर ओरेब को ओरेब नामक चट्टान पर और जेब को जेब नामक दाखरस के कुण्ड पर जान से मार डाला। उन दोनों के सिर वे गिदोन के पास ले आए।

8 1 तब एप्रैमी लोगों गिदोन से झगड़ते हुए कहने लगे, "जब तुम मिद्यान से युध्द करने गए थे, तब हम को साथ में क्यों नहीं लिया था ?" 2 गिदोन बोला,"यदि तुम्हारे से तुलना करें, तो मैंने हासिल ही क्या किया है? क्या एप्रैम की उपज के बचे कुचे अंगूर अबीएज़ेर के मेरे छोटे गोत्र की पूरी उपज से बेहतर नहीं है। 3 मिद्यान, ओरेब और ज़ेब के गवर्नरो को परमेश्वर ने तुम्हारे हाथ में दे दिया है। तुम्हारी तुलना में, तब मैं क्या कर सका था? इसके बाद ही गिदोन के प्रति जो गुस्सा उन के मन था, वह शान्त हो गया। 4 तब गिदोन और उसके साथ के तीन सौ आदमी जो थकने के बावजूद पीछा करते रहे थे, यर्दन के किनारे पार उतर आए। 5 तब गिदोन ने सुक्केत के लोगों से कहा," मेहरबानी से मेरे बाद में आने वाले लोगों को खाना दो, क्योंकि वे पूरी तरह से थक चुके हैं। मैं अभी मिद्यान के जेबह और सल्मुन्ना नामक बादशाहों का पीछा कर रहा हूँ।" 6 सुक्कोत पर राज्य करने वाले बोले, "क्या वे दोनों तुम्हारे हाथ में आ चुके है, कि हम तुम्हारी फ़ौज को खाना खिलाएँ?" 7 गिदोन बोला,"ठीक है, जब याहवे मेरे हाथ में जेबह और सल्मुन्ना को कर देंगे तब मैं तुम्हारी देह जंगल में कटीली झाड़ियों और बिच्छुओं से कटवाऊँगा।" 8 वहाँ से वह पनूएल पहुँचा और वहाँ के लोगों से भी यही कहा। लेकिन पनूएल के लोगों की प्रतिक्रिया बिल्कुल वैसी थी, जैसी सुक्कोत की। 9 पनूएल के लोगों से भी उस ने कहा,"वापस सही-सलामत आने पर मैं इस मीनार को गिरा दूँगा।" 10 पन्द्रह हज़ार फ़ौजियों के साथ जेबह और सल्मुन्ना ककोर में थे। पूर्वियों की पूरी फ़ौज में से उतने ही बाकी बचे थे। तलवार से मारे गए लोग एक लाख बीस हज़ार थे। 11 तब गिदोन नोबह और योग्बहा के पूरब में तम्बूओं में रहने वालों के रास्ते से चढ़ गया। उस समय छावनी बेखबर थी, तभी उस ने हमला बोल दिया। 12 जेबह और सल्मुन्ना के भागने पर उस ने उनका पीछा किया और मिद्यानियों के दोनों राजा, जेबह और सल्मुन्ना को पकड़ लिया उनकी पूरी सेना को उस ने बिखरा दिया। 13 तभी योआश का बेटा गिदोन हेरेस घाटी की लड़ाई से वापस आया। 14 उस ने सक्कोत के एक नवजवान को पकड़ा और पूछताछ की। उस ने सुक्कोत के सत्तहत्तर राजकुमारों और बुज़ुर्गो के नाम-पते लिखे। 15 सुक्कोत के लोगों ने पास आकर कहा,"ज़िबा और सलमुन्ना यहाँ है। जब हम यहाँ तुम्हारे पास थे, तब तुम ठठ्ठा करके कह रहे थ। ज़िबा और सल्मुन्ना को पहले हिरासत में ले लो, तब हम तुम्हारी थकी हुयी फ़ौज को खाना देंगे। 16 तब उस नगर के बुज़ुर्गों को उस ने पकड़ा और जंगल की कटीली झाड़ियों तथा बिच्छू पौधों से सुक्कोत के लोगों को तकलीफ़ दी। 17 पनूएल की मीनार को उस ने गिरा दिया और उस नगर के लोगों को मार झाला। 18 तब उस ने जेबह और सल्मुन्ना को कहा,"जिन लोगों को तुम ने ताबोर पर मार डाला था, वे कैये थे ? उन्हों ने कहा, "वे तुम्हारी तरह ही थे। हर एक की शक्ल राज-पुत्र की तरह थी।" 19 उस ने कहा, "वे मेरे भाई थे। वे मेरी ही माँ के बेटे थे। याहवे के जीवन की कसम, यदि तुम ने उन्हें ज़िन्दा छोड़ दिया होता, तो मैं तुम्हें न मारता।" 20 तब उस ने अपने बड़े बेटे येतेर से कहा," उठो, इन का कत्ल कर डालो।" लेकिन नवजवान ने अपनी तलवार न उठायी। वह डर इसलिए गया क्योंकि छोटा ही था। 21 तब जेबह और सल्लमुन्ना बोल उठे, "तुम खुद उठो और हम पर हमला करो क्योंकि जैसा इन्सान होता है वैसी ही उसकी ताकत होती है।" इसलिए गिदोन उठा और जेबह व सल्मुन्ना का कत्ल कर डाला और उन चन्द्रहारों को ले लिया जो उन के ऊँटों की गर्दन पर थे। 22 तब इस्राएल के आदमियों ने गिदोन से कहा, "तुम हमारे ऊपर राज्य करो। तुम्हारा बेटा और पोता भी राज्य करें, क्योंकि तुम ने हम को मिद्यान के हाथ से आज़ाद किया है। 23 गिदोन उन से बोला,"तुम पर मैं राज्य नहीं कर सकता और न ही मेरा बेटा। याहवे ही तुम पर राज्य करें। 24 फिर गिदोन ने उन से कहा,"मैं तुम से कुछ माँगता हूँ। तुम मुझो अपने लूटे हुए सामान में से बालियाँ दे दो। वे बोले,"हम ज़रूर देंगे।" 25 तब उन्हों ने एक कपड़ा

बिछाया और बालियाँ उस पर डाल दीं। 26 उन बालियों का
वज़न एक हज़ार सात सौ शेकेल था। इसके अलावा चंद्रहार,
झुमके और बैगनी रंग के कपड़े जो मिद्यानियों के राजा पहने
थे। साथ ही उन के ऊँटों के गलों की जंजीरें। 27 गिदोन ने
इन सभी गहनों का एक एपोद बनवाया और ओप्रा नगर में
रखा। सभी इस्राएलियों ने उसकी पूजा की। इसी वजह से
यह गिदोन और उसके परिवार के लिए एक फन्दा बन गया।
28 इस तरह मिद्यानी इस्राएलियों के हाथ के नीचे ही रहे
और विद्रोह करने की हिम्मत न की। अगले चालीस साल
जब तक गिदोन ज़िन्दा था देश में शान्ति रही। 29 योआश
का बेटा यरूब्बाल अपनेार में रहने लगा था। 30 गिदोन के
तमाम पत्नियाँ होने की वजह से उसके सत्तर बेटे थे। 31 शकेम
में रहने वाली उसकी रखेल से जो बेटा हुआ, उसका नाम
अबीमेलेक रखा गया। 32 बुढ़ापे में गिदोन मर गया और ओप्रा
नामक गांव में जहाँ उसके पिता को दफ़नाया गया था, उसे
भी दफ़ना दिया गया। 33 उसकी मौत के बाद इस्राएली फिर
से बालबरीत की पूजा करने लगे। 34 जिस परमेश्वर ने उन
लोगों को दुश्मनों से छुड़ाया था, उन्हें वे भूल गये। 35 गिदोन
के मरने के तुरन्त बाद इस्राएलियों ने बालबरीत को अपना
ईश्वर मान लिया और बाल की मूर्ति की महिमा गाने लगे।

9 1 अबीमेलेक शकेम गया और वहाँ अपने मामा लोगों से
और नाना के परिवार से मिला। 2 उस ने कहा,"शकेम के
वासियों से पूछो कि उन के लिए भला क्या है, यह कि गिदोन
के सत्तर बेटे तुम्हारे ऊपर शासन करें या एक ही आदमी?
यह मत भूलना कि मैं भी तुम्हारा एक हिस्सा हूँ। 3 उसके
मामाओं ने वहाँ के लोगों से यह सवाल पूछा। तब सभी को
यह बात पसन्द आयी, कि वे एक आदमी (अबीमेलेक) को ही
अपना अगुवा मानें। 4 तब उन लोगों ने बालबरीत के मन्दिर
में से सत्तर टुकड़े रूपे उसको दिए। इस राशि से अबीमेलेक
ने किराए पर नीच और लुच्चे लोग रख लिए, जो उसकी की
मानने लगे। 5 तब वह ओप्रा में अपने पिता के घर गया। उस ने
अपने सत्तर भाईयों को एक ही पत्थर पर मार डाला। लेकिन
सब से छोटा योताम छिपकर बच गया। 6 इसके बाद शकेम
और बेतमिल्लो के सभी लोगों ने अबीमेलेक को राजा बनाया।
7 यह खबर मिलते ही योताम गरिज्जीम पहाड़ के ऊपर
चढ़कर ऊँची आवाज़ से बोला, "हे शकेम के वासियों, यदि तुम
चाहते हो कि परमेश्वर तुम्हारी सुने तो मेरी सुनो, 8 एक बार
की बात है पेड़ किसी का अभिषेक करके अपने ऊपर राजा
बनाने के लिए तैयार हुए। उन्हों ने जैतून के पेड़ से कहा कि
वह उन पर राजा बन जाए।" 9 जैतून का पेड़ बोला,"क्या मैं
अपना चिकनापन छोड़कर, जिस की वजह से लोग परमेश्वर
और इन्सानों दोनों को इज़्ज़त देते हैं, पेड़ों का शासक बनकर
इधर-उधर फिरता रहूँ? 10 इसके बाद पेड़ों ने अंजीर के पेड़ से
बिनती की, "हमारे ऊपर अधिकारी बन जाओ।" 11 अंजीर के
पेड़ ने जवाब दिया,"क्या मैं अपनी मिठास और अच्छे फलों
को छोड़कर पेड़ों पर राज्य करूँ और मारा-मारा फिरूँ?"
12 फिर पेड़ों ने अंगूर की लता से कहा कि वह उन सभी के
ऊपर राज्य करे। 13 अंगूर की लता बोली,"क्या मैं अपने नए
रस को छोड़कर जिस से परमेश्वर और इन्सान दोनों ही खुश
होते हैं, अधिकारिणी बन कर इधर-उधर भटकूँ? 14 तब सभी
पेड़ों ने झड़बेरी से कहा,"तुम हम पर राज्य करो।" 15 झड़बेरी
बोली,"यदि सचमुच तुम चाहते हो तो मेरी छांह में आओ और
नहीं तो झड़बेरी से निकली आग लबानोन के देवदारों को जला
डालेगी। 16 इसलिए यदि तुम ने ईमानदारी से अबीमेलेक को
राजा बनाया है और गिदोन तथा उसके परिवार के साथ
सही व्यवहार किया है तो अच्छा है। 17 मेरे पिता ने तुम्हारे
लिए लड़ाई लड़ी और अपनी जान हथेली पर रखकर तुम्हें
मिद्यानियों के शिकंजे से छुड़ाया। 18 लेकिन आज तुम लोगों ने
मेरे पिता के खिलाफ़ अपना सिर उठाया है। उसके सत्तर बेटों
को मार डाला तथा रखैल के बेटे अबीमेलेक को शकेम के ऊपर
राजा ठहराया, क्योंकि वह तुम्हारा भाई है? 19 इसलिए यदि
तुम ने आज के दिन यरूब्बाल (गिदोन) और उसके परिवार
के साथ अच्छा बर्ताव किया है तो तुम भी खुश हो और वह
भी। 20 यदि नहीं तो अबीमेलेक से ऐसी आग निकले, जिस
से शकेम के लोग और बेतमिल्लो जल जाएँ। शकेम के लोगों
और बेतमिल्लो से ऐसी आग निकली कि अबीमेलेक भस्म हो
जाए। 21 तब योताब वहाँ से भाग खड़ा हुआ और अपने भाई
अबीमेलेक के डर से बेर में जाकर रहने लगा। 22 तीन साल
तक अबीमेलेक इस्राएल का गवर्नर रहा। 23 तब परमेश्वर ने
अबीमेलेक और शकेम के लोगों के बीच एक बुरी आत्मा भेज
दी। इसलिए शकेम के लोग अबीमेलेक से धोखाधड़ी करने
लगे। 24 जिस से गिदोन के सत्तर बेटों पर किए गए अत्याचार
का परिणाम भुगता जाए। और उनका खून उनको मारने वाले
उन के भाई अबीमेलेक के सिर पर और उसके अपने भाईयों
का खून करने में उनकी मदद करने वाले शकेम के लोगों के
सिर पर भी है। 25 तब शकेम के लोगो ने पहाड़ों की चोटियों
पर उसके लिए मारने वालों को बैठाया, जो उस रास्ते पर
आने जाने वालों को लूटा करते थे। इसकी खबर अबीमेलेक को
भी मिल गयी। 26 तब एबेद का बेटा गाल अपने भाईयों के
साथ शकेम आया। शकेम के लोगो ने उस पर विश्वास रखा।
27 उन्हों ने मैदान में अपने अंगूर के बगीचे में अंगूर तोड़कर
रस निकाला। वे धन्यवाद की भेंट चढ़ाने के बाद अपने देवता
के मन्दिर में खाने पीने में लग गए। वहाँ वे अबीमेलेक को

बुरा भला भी कहने लगे। 28 तब अबीमेलेक का बेटा गाल
बोला,"अबीमेलेक है कौन? और शकेम कौन है कि हम उसके
नीचे रहें ? क्या वह यरूब्बाल (गिदोन) का बेटा नहीं? क्या
जबूल उसका ऑफिसर नहीं? और शकेम की नींव डालने वाले
हमोर के सेवक ? फिर हम उसकी सेवा क्यों करें? 29 यदि ये
लोग मेरे अधिकार में रहे होते तो क्या ही अच्छा होता, तब मैं
अबीमेलेक को दूर कर सकता था। फिर उस ने अबीमेलेक से
कहा,"अपनी फ़ौज बढ़ाकर आ जाओ। 30 गाल की इन बातों
को सुनते ही गवर्नर ज़बूल आग बबूला हो गया। 31 उस ने
बड़ी चालाकी से अबीमेलेक के पास समाचार भिजवाया, कि
एबेद का बेटा गाल और उसके भाई शकेम में आकर नगर
वालों को तुम्हारी खिलाफ़ करने के लिए प्रेरित कर रहे हैं।
32 इसलिए तुम अपने साथियों के साथ मिलकर रात ही में
मैदान में बैठ जाओ। 33 बड़े सवेरे इस नगर पर हमला बोल
देना। जब वह तुम्हारा मुकाबला करे, तब तुम जो कर सको
करना। 34 तब अबीमेलेक और उसके साथी चार दल बनाकर
रात ही में बैठ गए। 35 एबेद का बेटा गाल बाहर नगर के
फाटक पर खड़ा हो गया। तभी अबीमेलेक और उसके साथी
भी खड़े हो गए। 36 उन लोगों को देखकर गाल न जबूल से
कहा,"देखो, पहाड़ों की चोटियों से लोग उतर रहे हैं।" जबूल
बोला, "वह तो पहाड़ों की छाया है, जो तुम्हें लोगों की सी
लग रही है।" 37 गाल फिर बोला,"देखो, लोग चले आ रहे
हैं। एक दल मोननीम नामक बांज पेड़ के रास्ते से चला आ
रहा है। 38 जबूल ने कहा,"अब क्या हुआ, तुम तो कहते थे कि
अबीमेलेक कौन है कि हम उसके उसके आधीन रहें?" ये वे ही
लोग हैं, जिन्हें तुम फालतू समझ रहे थे। अब मुकाबला करो
तो जानें। 39 तब गाल शकेम के लोगों का अगुवा बन गया
और अबीमेलेक से लोहा लिया। 40 अब अबीमेलेक ने उसका
पीछा किया, तो वह भाग निकला, लेकिन फाटक तक पहुँचते
पहुँचते वह और साथी ज़ख्मी हालत में ढेर हो गए। 41 इसके
बाद अरूमा में अबीमेलेक रहने लगा। जबूल ने गाल और
उसके भाईयों को निकाल दिया। 42 अगले दिन अबीमेलेक को
समाचार मिला कि लोग मैदान में निकल गए हैं। 43 अपनी
फ़ौज को तीन हिस्सों में बाँटकर वह मैदान में आक्रमण के लिए
बैठ गया। जैसे ही लोग बाहर आए, उन्हें मार डाला गया।
44 अपने साथ के दलों सहित अबीमेलेक दौड़ा और फाटक पर
खड़ा हो गया। दो दलों ने मैदान के लोगों पर हमला करके उन्हें
बर्बाद किया। 45 उसी दिन उस ने नगर को अपने अधिकार में
कर लिया। उस ने वहाँ के लोगों को मौत के घाट उतार दिया
और नगर को तहस-नहस कर डाला। 46 यह समाचार मिलते
ही शकेम के वासियों ने एलबरीत के मन्दिर में शरण ली।
47 जब अबीमेलेक को यह मालूम पड़ा कि शकेम के लोग इकठ्ठे
हो गए हैं, 48 तब वह अपने साथियों के साथ सलमोन नामक
पहाड़ पर चढ़ गया। कुल्हाड़ी से उस ने पेड़ की एक डाली
काटी और उसे अपने कन्धे पर रखा। उस ने अपने साथियों को
भी वैसा करने को कहा 49 तब उन लोगों ने भी वैसा किया
और अबीमेलेक के किले में आग लगा दी। तब शकेम के गुम्मट
के सभी आदमी-औरत मर गए। 50 तब अबीमेलेक तेबेस गया।
उस ने उसे ले लिया और वहाँ तम्बू गाड़ दिए। 51 लेकिन उस
नगर के बीच एक मजबूत गुम्मट था उसी गुम्मट में सभी लोग
घुस गए और उसे बन्द करके ऊपर चढ़ गए। 52 तब अबीमेलेक
गुम्मट के पास गया और लड़ाई में लग गया और आग लगाने
के लिए दरवाज़े तक पहुँचा। 53 तभी एक महिला ने चक्की के
पाट को अबीमेलेक के सिर पर पटक दिया, जिससे उसका सिर
फट गया। 54 तभी उस ने हथियारों को ढोने वाले को बुलाकर
कहा, " अपनी तलवार से मुझे मार डालो, ताकि लोगों को
यह कहने का मौका न मिले कि एक महिला ने अबीमेलेक को
मार डाला" उस जवान ने तब अबीमेलेक के कहने के अनुसार
किया। 55 यह देखते ही इस्राएली भाग खड़े हुए। 56 इस तरह
अबीमेलेक ने अपने सत्तर भाईयों की हत्या करके जो बुरा
किया था उसके बदले में उसे मौत की सज़ा दी। 57 शेकेम के
आदमियों को भी उनकी दुष्टता का फल मिल गया। इस तरह
गिदोन के बेटे योताम के कहे शब्दों के अनुसार हुआ।

10 1 तोला दोदो का पोता और पूआ का बेटा था वह
शामीर में रहा करता था। 2 अबीमेलेक के मरने के
बाद उस ने इस्राएल पर तेईस साल तक राज्य किया। 3 उसके
मरने के बाद याईर ने बाईस साल तक शासन किया। 4 उसके
तीस बेटे गदहियों के तीस बच्चों की सवारी किया करते थे।
गिलाद देश में उन के तीस नगर भी थे। 5 याईर के मरने के
बाद उसे कामोन में दफ़ना दिया गया। 6 इस्राएली फिर से
बाल, अश्तोरेत और आराम, सीदोन, मोआब, अम्मोनियों,
पलिश्तियों के देवताओं को पूजने लगे। उन्हों ने याहवे को भुला
दिया। 7 तब याहवे परमेश्वर को बहुत गुस्सा आया और उन्हों
ने उन लोगों को पलिश्तियों और अम्मोनियों के वश में कर
दिया। 8 उस साल इस्राएली इन के दबाव में रहे। एमोरियों
के गिलाद में रहने वाले भी इन्हें सताते रहे। 9 अम्मोनी लोग
यहूदा, बिन्यामीन और एप्रैम के घराने से लड़ने के लिए यर्दन
के उस पर जाया करते थे। 10 तब इस्राएलियों ने यह कबूल
किया कि उन लोगों ने परमेश्वर को छोड़ बाल को अपना
कर बड़ा भारी गुनाह किया है। 11 तब परमेश्वर ने उन से
पूछा,"क्या मैंने तुम्हें मिस्रियों, पलिश्तियों, एमोरियों, और
अम्मोनियों के चुंगल से छुड़ाया न था? 12 जब सिदोनी,
अमालेकी और माओनी लोगों ने तुम्हें तकलीफ दी थी और

तुम मेरे सामने गिड़ गिड़ाए, तो मैंने तुम्हें उन से आज़ाद नहीं
किया था ? 13 इसके बावजूद तुम ने मुझे छोड़ दूसरे देवताओं
की पूजा करने लगे। इसलिए अब मैं तुम्हें नहीं छुड़ाऊँगा।
14 अब जाकर उन्हीं से मदद माँगों, वही तुम्हें बचाएँ।"
15 इस्राएली याहवे से बोले, "हम ने गुनाह किया है, इसलिए
आपकी जो मर्जी है कीजिए, लेकिन कम से कम अभी तो बचा
लीजिए। 16 तब उन्हों ने दूसरे देवी-देवताओं को अपने पास
से निकाल दिया। वे लोग फिर से याहवे की उपासना करने
लगे। इस्राएलियों के दुख को देखकर परमेश्वर को दुख हुआ।
17 इसके बाद अम्मोनियों ने गिलाद में और इस्राएलियों ने
मिस्पा में अपने अपने तम्बू गाड़े 18 तब गिलाद के गवर्नर लोग
एक दूसरे से पूछने लगे, "अम्मोनियों से लड़ने में जो आदमी
पहल करेगा, वही गिलाद के लोगों का मुखिया होगा

11 1 गिलाद का यित्पह बहुत ही कुशल सैनिक था। वह
देह व्यापार करने वाली का बेटा था। उसके पिता
का नाम गिलाद था। 2 गिलाद की पत्नी के दूसरे बेटों ने बड़े हो
जाने पर यिप्तह से कहा,"तुम पराई औरत के बेटे हो, इसलिए
हमारी पारिवारिक सम्पत्ति में तुम्हारा कोई हक न होगा"
3 इसलिए यिप्तह वहाँ से जाकर तोब में रहनेलगा यित्पह
के साथ कुछ लोग हो लिए। 4 कुछ दिनों के बाद अम्मोनी
इस्राएल से लड़ने लगे। 5 इसी दौरान गिलाद के कुछ बुज़ुर्ग
लोग यिप्तह को लाने के लिए तोब देश गए। 6 उन्हों ने यिप्तह
से कहा,"अम्मोनियों के खिलाफ़ हम लोग लड़ेंगे, तुम हमारे
अगुवा बन जाओ।" 7 यिप्तह बोला,"क्या तुम भूल गए हो,
कि तुम ने मुझे मेरे पिता के घर से निकाल दिया था? और
अब मुसीबत के वक्त मुझ से मदद मांग रहे हो? 8 गिलाद के
बुज़ुर्गो ने यह बात फिर से दोहरायी और कहा यदि वह उनकी
बात मानेगा, तो वे उसे सभी लोगों के ऊपर प्रधान ठहराएँगे।
9 यिप्तह ने पूछा,"यदि अम्मोनी हार जाएँ तो क्या मैं सचमुच
तुम्हारा प्रधान बन जाऊँगा?" 10 बुज़ुर्ग लोग बोले,"हाँ जैसा
हम कह रहे हैं, वैसा ही होगा, याहवे परमेश्वर भी यह सुन
रहे है, वैसा ही होगा" 11 तब यिप्तह गिलाद के बूढ़े लोगों
के साथ गया और उन लोगों ने उसे अपना प्रधान स्वीकार
किया। 12 तब यिप्तह ने अम्मोनियों के बादशाह के पास लोग
भेजकर यह पूछा,"तुम्हारी मेरे साथ क्या दुश्मनी है कि मुझे से
लड़ने की योजना बना रहे हो?" 13 अम्मोनियों ने जवाब में
कहा,"मिस्र से लौटते समय इस्राएलियों ने हमारा काफी बड़ा
इलाका हथिया लिया था, इसलिए वहीं हमें वापस चाहिए।"
14,15 तब यिप्तह ने फिर संदेश भेजा कि इस्राएल ने न
मोआबियों की और न अम्मोनियों की ज़मीन ली। 16,17 लेकिन
उन्हों ने एदोम के राजा से उन के देश में से गुज़रने की अनुमति
माँगी, लेकिन उन्हें अनुमति नहीं मिली। इसी तरह से मोआब
के राजा ने भी किया। इस वजह से इस्राएल को कादेश में
ठहरना पड़ गया। 18 तब इस्राएल घूमते-घूमते दोनों के बाहर
पूरब में अर्नोन के इसी पार आ गया। 19 फिर इस्राएलियों
ने एमोरियों को खबर भेजी कि वे अपने देश से गुज़रने दे।
20 लेकिन वहाँ के राजा सीहोन को भरोसा न होने के कारण
उस ने भी बिनती ठुकरा दी और लड़ाई लड़ी। 21 इस्राएल
इस युध्द में जीत गया और एमोरियों के ऊपर अधिकारी हो
गया। 22 अर्नोन से यब्बोक तक और जंगल से लेकर यरदन
तक। 23 इसलिए जब कि याहवे ने एमोरियों का खदेड़ दिया
है, फिर तुम क्या उसको पा सकोगे ? 24 क्या कमोश देवता
जो तुम्हें दे, तुम उसे ही नहीं पाओगे ? इसी तरह जिन लोगों
को हमारे परमेश्वर सामने निकाले उन के देश के हकदार हम
होंगे ? 25 क्या तुम मोआब के राजा सिप्पोर के बेटे बालाक से
बेहतर हो ? क्या उस ने कभी इस्राएल से पंगा लिया। 26 जब
कि इस्राएल हेशबोन तथा उसके ग्रामीण इलाकों के, अरोएर
और उसके ग्रामों में और अर्नोन के तट के सभी नगरों में तीन
सौ साल से रह रहा है, तो अब तक तुम ने उन्हें आज़ाद क्यों
नहीं करा लिया ? 27 मैंने तुम्हारे खिलाफ़ गुनाह नहीं किया
है। तुम ही मेरे साथ गलत तरीके से पेश आ रहे हो। इसलिए
इन्साफ़ करने वाले परमेश्वर इस्राएलियों और अम्मोनियों के
बीच इन्साफ़ करें।" 28 यह सब सुनने के बावजूद अम्मोनियों
के राजा ने यिप्तह के संदेश को नकार दिया। 29 तब यिप्तह में
परमेश्वर का आत्मा आया। वह गिलाद के मिस्पा से गुज़रता
हुआ अम्मोनियों की ओर चल पड़ा। 30 यिप्तह ने एक मन्नत
मान ली। वह यह भी कि यदि उसे अम्मोनियों पर जीत मिल
जाए, 31 तो युध्द से लौटने पर जो भी उसका स्वागत करने
पहले दरवाज़े पर आएगा उसे वह होमबलि करके चढ़ाएगा।
32 युध्द में यिप्तह की जीत हुयी। 33 अरोएर से मिन्नित तक
लगभग बीस नगर हैं। आबेलकरामीम तक उस ने जीत का
झण्डा फहराया और अम्मोनियों के दाँत खट्टे हो गए। 34 उसके
घर वापस लौटने पर उसकी एकलौती बेटी डफ बजाते हुए
उसका स्वागत करने सामने आ गयी। 35 उसको देखते ही वह
चिल्ला उठा,"हाय मेरी बेटी तुम ने यह क्या किया ? मुझे
दुख देने वालों में तुम भी शामिल हो गयी हो। मैं ने परमेश्वर
से एक वायदा किया था और उस से मैं मुकर नहीं सकता।"
36 उसको बेटी बोली,"पिताजी आप अपनी प्रतिज्ञा को पूरा
कीजिए। परमेश्वर ने तो आपको अम्मोनियों पर जीत दिलायी
है। 37 फिर उस ने अपने पिता से कहा,"मुझे दो महीनों के लिए
छोड़ दीजिए, ताकि मैं अपनी सहेलियों के साथ पहाड़ों पर
रहकर अपने कुँवारीपन पर शोक मनाऊँ। 38 यिप्तह ने अपनी
बेटी की बिनती को मान लिया और वैसा ही होने दिया। 39 दो

महीनों के बाद यह लड़की वापस आ गयी और पिता ने अपनी मन्नत को पूरा किया। इस लड़की ने कभी भी किसी पुरूष के साथ शारीरिक सम्बन्ध न रखा था। 40 इसलिए इस्त्राएलियों में यह एक प्रथा बन गई, कि हर साल इस्त्राएली महिलाएँ यिप्तह गिलादी की बेटी की बड़ाई करने साल में चार दिन तक जाया करती थीं।

12 1 एक दिन एप्रैमी सोपान गए और यिप्तह से पूछा,"जब तुम अम्मोनियों से युध्द करने गए थे, तब हमको अपने साथ आने को क्यों नहीं कहा ?" अब हम तुम सभी को आग से भस्म कर देंगे। 2 मेरे लोगों का और मेरा, अम्मोनियों से झगड़ा हो गया था, और जब मैंने तुम से मदद मांगी, तब तुम ने मुझ से मुँह मोड़ लिया था। 3 लेकिन मैंने हिम्मत नहीं छोड़ी और आगे बढ़ता गया। जिसका नतीजा यह हुआ कि अम्मोनियों को मुँह की खानी पड़ी। और अब तुम मुझ से क्यों लड़ना चाह रहे हो? 4 तब यिप्तह गिलाद के साथ मिलकर एप्रैम से लड़ा। एप्रैम कहा करता था, "हे गिलगाल तुम एप्रैम और मनश्शे के बीच रहने वाले एप्रैमियों के भगोड़े हो और गिलादियों ने उन्हें खतम कर लिया। 5 गिलादियों ने एप्रैम के सामने के घाटों को हथिया लिया था, और जब कभी कोई भागा हुआ पार जाने के लिए इज़ाजत माँगा करता था, तब गिलाद के लोग उसे से पूछते थे कि क्या वह एप्रैमी है। यदि वह इन्कार करता, 6 तो वे उस से शिब्बोलेत कहने के लिए कहते थे, क्योंकि उसके लिए सही सही बोलना मुश्किल था। इसके बाद वे उसे पकड़ते थे और मार डाला करते थे। इस तरह उन दिनों में बयालीस हज़ार एप्रैमी मौत के घाट उतार दिए गए। 7 सात साल तक यिप्तह न्याय करता रहा था। उसके मरने के बाद उसे दफ़ना दिया गया। 8 इबसान उसके बाद न्यायी बन गया, जिसने सात साल तक न्याय किया। 9 उसके तीस पुत्र हुए और तीस बेटियाँ। अपने बेटों का विवाह उस ने बाहर की लड़कियों से करा दिया। और इस तरह तीस बहुएँ उसके यहाँ आयीं। 10 उसके मरने के बाद बेतलेहम में उसे मिट्टी दे दी गई। 11 जबूलून का एलोल उसके बाद न्यायी हो गया। दस साल तक उस ने राज्य किया। 12 उसकी मौत के बाद उसे अय्यालोन में दफ़नाया गया। 13 उस के बाद हिल्लेल का बेटा पिरातोनी अब्दोन इस्त्राएल का इन्साफ़ करने लगा। 14 उसके चालीस बेटे और तीस पोते हुए। ये गदहियों के सत्तर बच्चों की सवारी किया करते थे। उस ने इस्त्राएल पर आठ साल तक राज्य किया। 15 उसके देहान्त हो जाने पर उसे पिरातोन में गाढ़ दिया गया।

13 1 फिर से परमेश्वर के खिलाफ़ काम करने से, उन्हें पलिश्तियों को गुलामी करनी पड़ी। 2 दानियों के कुल में सोरावासी मानोह नामक एक व्यक्ति था, जिसकी पत्नी बांझ थी। 3 प्रभु का दूत एक महिला के पास आया और कहा,"तुम गर्भवती हो जाओगी और तुम्हें एक बेटा मिलेगा।" 4 इसलिए तुम सावधानी से जीवन बिताना। दाखमधु, मदिरा से बचना और किसी अशुध्द चीज़ को मत खाना। 5 तुम्हारे बेटे के बाल मत कटवाना। बचपन से वह नाज़ीर रहेगा। वही इस्त्राएलियों को पलिश्तियों के चुंगल से मुक्त करेगा। 6 इस महिला ने अपने पति से कहा," परमेश्वर के संदेशवाहक की तरह एक जन मेरे पास आया। मैंने उस से पूछा कि वह कहाँ का है, लेकिन उस ने जवाब नहीं दिया, न ही अपना नाम बतलाया। 7 उस ने बताया कि हमारे बेटा होगा जिसे नाज़ीर होना है और मुझे नशे की चीजों और अशुध्द चीज़ों से परे रहना है।" 8 तब मानोह ने परमेश्वर से कहा कि वह व्यक्ति फिर से आए और बतलाए कि होने वाले बच्चे के साथ क्या किया जाए। 9 उसकी बिनती सुनी गई और जब वह अकेली मैदान में बैठी हुयी थी, तभी वह संदेशवाहक उसके पास आया। 10 यह महिला झटपट उठी और अपने पति के पास जाकर सब कुछ बताया। 11 यह सुनते ही मानोह अपनी पत्नी के साथ चला और पहुँचते ही पूछा कि क्या वह वही व्यक्ति था। उस ने हाँ में उत्तर दिया। 12 मानोह ने कहा,"तुम्हारी कही हुयी बात पूरी हो लेकिन हमें यह तो बताओ कि इस बच्चे का काम क्या होगा ?" 13 याहवे के दूत ने कहा,"जिन चीज़ो से अलग रहने को मैंने तुम्हारी पत्नी से कहा है, वह अलग रहे 14 और दी हुयी आज्ञा को वह मानें।" 15 मानोह बोला,"आप थोड़ा रूकें हम आपके लिए स्वादिष्ट खाना बनाते हैं।" 16 याहवे का दूत मानोह से बोला,"मुझे कुछ भी नहीं खाना है, यदि तुम कुछ कुर्बानी करना चाहते हो तो परमेश्वर के लिए करो।" 17 मानोह ने याहवे के दूत से कहा,"अपना नाम बताओ, ताकि इन बातों के पूरे होने पर मैं तुम्हारे लिए कुछ कर सकूँ। 18 याहवे का दूत बोला,"मेरा नाम अद्भुत है।" 19 तब मानोह ने अन्नबलि के साथ बकरी का बच्चा लेकर चट्टान पर याहवे के लिए चढ़ाया। तभी उस दूत ने एक काम किया। 20 जिस समय आग की लपट उठ रही थी, वह उन के देखते-देखते लपट के साथ गायब हो गया। यह सब देखने पर मानोह और उसकी पत्नी मुँह के बल धरती पर गिर पड़े। 21 इसके बाद ऐसा दर्शन उस दूत ने उन दोनों को कभी नहीं दिया। तभी मानोह को यह भी पता लग गया कि वह परमेश्वर का दूत था। 22 तब मानोह बोल उठा," हमें ज़रूर अपनी जान से हाथ धोना पड़ेगा क्योंकि परमेश्वर ने हमें दर्शन दिया है। 23 मानोह की पत्नी बोली,"यदि परमेश्वर हमें मार ही डालना चाहते, तो

हमारी कुर्बानी को न अपनाया होता न ही परमेश्वर हमें यह सब दिखाते और सुनाते। 24 समय हो जाने पर उन के यहाँ एक बेटा पैदा हुआ उसका नाम उन्हों ने शिमशोन रखा। वह बच्चा बढ़ता गया और परमेश्वर का आशीर्वाद उस पर था। 25 सोरा और एशताओल के बीच में याहवे का आत्मा उसे उभारता रहा।

14 1 एक दिन तिम्ना में शिमशोन ने एक पलिश्ती लड़की को देखा। 2 उसे देखने के बाद वह अपने माता-पिता के पास गया और उस लड़की से विवाह करवाने की बिनती की। 3 उसके माता-पिता का जवाब यह था कि क्या उसके अपने लोगों और जान पहचान वाले लोगों में शादी के लायक कोई लड़की नहीं है ? उन के हिसाब से उसे परमेश्वर के साथ वाचा न बान्धे हुए लोगों के साथ ऐसा रिश्ता नहीं करना चाहिए। उनकी सलाह के बावजूद शिमशोन ने ज़िद्द की, कि उसे वही लड़की पसन्द है। 4 उसके माता-पिता इस बात से अनजान थे कि परमेश्वर पलिश्तियों को सज़ा देने के लिए मौके का इन्तज़ार कर रहे थे। उन दिनों में पलिश्ती इस्त्राएलियों पर कब्जा़ जमाए हुए थे। 5 एक दिन शिमशोन अपने माता-पिता के साथ तिम्ना में एक अंगूर के बगीचे के पास पहुँचा ही था, कि एक जवान शेर गरजते हुए आया। 6 तभी याहवे का आत्मा उस पर उतरा और उसकी ताकत से उस ने उस बकरी के बच्चे को इस तरह फाड़ डाला, जैसे एक बकरी के बच्चे को फाड़ डाला जाता है। 7 लेकिन यह बात उसके माता-पिता के कानों तक नहीं पहुँची। जब जाकर उस ने उस लड़की से बातचीत की, तो उसे बहुत ही अच्छी लगी। 8 कुछ दिनों के बीत जाने के बाद वह उसे लाने के लिए लौट रहा था, तब वह शेर की लाश देखने के लिए मुड़ गया। उस शेर पंजर में शहर की मक्खियाँ और शहद था। 9 उस शहद को हाथ में लेकर वह खाते हुए माता-पिता के पास पहुँचा और उन्हें भी खाने के लिए दिया। लेकिन उस ने यह नहीं बताया कि वह शहद शेर की सूखी हड्डियों में बनाए गए मधुमक्खी के छत्ते से निकाला गया था। 10 फिर उसके पिताजी लड़की के यहाँ गए जहाँ एक दावत भी थी। 11 उसे देखकर वे उसके साथ रहने के लिए तीस साथियों को ले आए थे। 12 शिमशोन ने उन से एक पहेली बूझने की बात कही। वह बोला,"यदि तुम इन दावतों के सात दिनों के अन्दर इसका मतलब बता दो, तो मैं तुम्हें तीस कुरते और तीस जोड़े कपड़े दूँगा। 13 यदि तुम न बता पाओगे तो तुम्हें मुझ को तीस कुर्ते और तीस जोड़े कपड़े देने होंगे। वे बोले," तुम जरा अपनी पहेली तो बतलाओ।" 14 उस ने कहा,"खाने वाले में से खाना और ताकतवर में मीठी चीज़ निकली।" लेकिन इस पहेली का मतलब वे तीन दिन में न बता सके। 15 वे लोग सातवे दिन शिमशोन की पत्नी से कहने लगे," तुम अपने पति को फुसलाकर पता करो, कि इस पहेली का अर्थ क्या है, नहीं तो हम तुम्हारे पिता को परिवार सहित जला डालेंगे। 16 तब शिमशोन की पत्नी रो-रोकर शिमशोन से कहने लगी,"तुम मुझ से प्यार नहीं करते हो, बल्कि मेरे दुश्मन हो। इसका सबूत यह है कि तुम ने मेरे लोगों को एक पहेली बतायी है, लेकिन इसका अर्थ मुझ तक से छुपा कर रखा है। शिमशोन ने उत्तर दिया,"मैंने अपने माता-पिता तक को तो बताया नहीं है, फिर तुम्हें कैसे बता सकता हूँ? 17 दावत के दिनों में वह महिला रोती ही रही। शिमशोन ने थक कर सातवें दिन पहेली का अर्थ बतला ही डाला। उस महिला ने अपने लोगो को भी बता दिया। 18 सातवें दिन सूरज ढलने से पहले उस नगर के लोगों ने शिमशोन से पूछा," शहद से ज्यादा मीठी वस्तु कौन सी होती है? और शेर से ज़्यादा ताकतवर कौन सा प्राणी है?" वह बोला,"यदि तुम मेरी कलोर को हल में न जोतते तो मेरी पहली का मतलब कभी नहीं बतला सकते थे।" 19 फिर याहवे का आत्मा उस पर बड़ी शक्ति के साथ उतरा। वह अश्कलोन गया और वहाँ तीस आदमियों को मार डाला। उस ने उनकी दौलत को लूट लिया और तीस जोड़े कपड़े पहेली बताने वालों को दे दिए। तभी उसका गुस्सा भी भड़क गया और वह अपने पिता के घर गया। 20 शिमशोन के जिस साथी ने उसके साथ दोस्ताना रिश्ता बनाकर रखा था, उस से शिमशोन की पत्नी का विवाह करा दिया गया।

15 1 कुछ दिनों के बाद गेहूँ की फ़सल कटने के वक्त शिमशोन एक बकरी के बच्चे को अपने साथ लेकर अपने ससुराल गया। वहाँ उस ने अपनी पत्नी के साथ एक कमरे में समय बिताना चाहा। लेकिन उसके ससुर ने उसे ऐसा करने से रोका। 2 उसका ससुर बोला,"मुझे यह मालूम था कि तुम मेरी बेटी से दुश्मनी रखते हो, इसलिए मैंने तुम्हारे साथी के साथ उसे ब्याह दिया है।" 3 तब शिमशोन बोल उठा,"अब यदि मैं पलिश्तियों का नुकसान भी करूँ, फिर भी बेगुनाह ठहरूँगा। 4 वह गया और तीन सौ लोमड़ियों को पकड़ कर लाया। उस ने मशाल लेकर दो दो लोमड़ियों की पूँछ एक साथ बान्ध दी। उन के बीच में उस ने एक-एक मशाल भी बान्ध दी। 5 इसके बाद उस ने मशालों में आग लगाई और पलिश्तियों के खेतों में छोड़ दिया। इसलिए पूलों के ढेर खड़े खेत और जैतून के बगीचे जल गए। 6 तब पलिश्तियों ने पूछा, "यह किसका काम है? लोगों ने बताया कि यह तिम्नी के दामाद शिमशोन की करतूत है। वह इसलिए बौखलाया हुआ है क्योंकि उसके ससुर ने अपनी बेटी उस से लेकर किसी और को दे दी है।" इस घटना के बाद पलिश्तियों ने शिमशोन की पत्नी और उसके

ससुर को आग से जला कर मार डाला। 7 शिमशोन जाकर
उन से बोला,"तुम्हारे इस काम का में बदला लूँगा। 8 उस ने
उन्हें एक एक करके मारा भी और एतान नामम चट्टान की
एक दरार में छिप गया। 9 तब पलिश्तियों ने हमला किया
और यहूदा देश में अपने तम्बू गाड़ दिए। यहाँ तक कि वे लही
तक फैल गए। 10 तब यहूदियों ने उन से इस किए जाने वाले
हमले की वज़ह पूछी। जवाब में उन्हों ने कहा कि वे शिमशोन
से बदला लेने के लिए ऐसा कर रहे हैं। 11 इसके बाद तीन
हज़ार यहूदी एताम नामक चट्टान की दरार में जाकर कहने
लगे,"क्या तुम्हें नहीं मालूम कि पलिश्ती हम पर हावी हैं,
फिर भी तुम ने हमारे साथ ऐसा किया है?" वह बोला,"जैसा
उन लोगों ने मेरे साथ किया था, वैसा ही मैंने उन के साथ
किया है।" 12 वे बोले,"हम यहाँ इसलिए आए हैं, ताकि तुम्हें
बान्धकर पलिश्तियों के सुपुर्द कर दें।" शिमशोन उन से बोला,
"तुम प्रण करो कि मुझ पर तुम लोग हमला नहीं करोगे। 13 वे
बोले," हम तुम्हें उन के हाथों में कर देंगे, लेकिन तुम्हारी जान
नहीं लेंगे। तब उन्हों ने उसे दो नई रस्सियों से बान्धा और उस
चट्टान में से ले गए। 14 उसके लही तक आते ही पलिश्तियों ने
उसे ललकारा। तब याहवे का आत्मा उसके ऊपर उतरा और
जिन रस्सियों से उसे बान्धा गया था, वे सभी कमज़ोर पड़
गयीं। 15 इसके बाद उसके हाथ एक गधे के जबड़े की हड्डी
लग गयी, जिससे उस ने लगभग एक हज़ार आदमियों की
जान ले ली। 16 तब शिमशोन बोल उठा," गदहे के जबड़े की
हड्डी से ढेर के ढेर लग गए, गदहे के जबड़े की हड्डी ही से मैंने
हज़ार आदमियों को मार डाला। 17 ऐसा कहने के बाद उस ने
वह हड्डी फेंक दी। उस जगह का नाम रामत-लही रख दिया
गया। 18 तेजी से प्यास लगने पर वह पुकार उठा, "इतना बड़ा
काम होने के बाद अब क्या मैं प्यासा अपने दुश्मनों के हाथों
में पड़ूँगा?" 19 तब लही में परमेश्वर ने एक गड्ढा कर दिया,
जिस में से पानी निकलने लगा। उस पानी से शिमशोन ने
अपनी प्यास बुझायी। इसलिए उस सोते का नाम एनहक्कोरे
रखा गया। 20 पलिश्तियों के दिनों में शिमशोन बीस साल तक
शासन करता रहा।

16 1 एक दिन शिमशोन गाज़ा गया और उस ने वहाँ
एक यौन व्यापार करने वाली को देखा। 2 गाज़ियों
को उसके वहाँ पहुँचने की खबर मिलते ही, उन्हों ने उसे घेर
लिया। वे लोग रात भर नगर के फाटक पर चुपचाप बैठे
रहे। 3 लेकिन शिमशोन बीच रात में उठा और दोनों पल्लों
को पकड़कर चौखटों सहित उखाड़ डाला। उन्हें उस ने अपने
कन्धों पर उठाया और हेब्रोन के सामने पहाड़ की चोटी पर ले
गया। 4 कुछ समय बाद वह सोरेक नामक नाले में रहने वाली
दलीला को चाहने लगा। 5 पलिश्तियों के सरदारों ने उस से
कहा कि वह शिमशोन को फुसला कर उस की ताकत का राज़
पूछ ले। यह भी कि उसे किस तरह काबू में किया जा सकता है।
यदि तुम हमारा काम कर सकोगी तो हम में से हर एक तुम्हें
ग्यारह-ग्यारह सौ चाँदी के टुकड़े देगा। 6 एक दिन दलीला
ने शिमशोन से उसकी ताकत का राज़ पूछा। 7 शिमशोन ने
कहा,"यदि मुझे न सुखायी गयी सात तातों से बान्धा जाए
तो मेरी ताकत कम हो जाएगी और मैं एक साधारण इन्सान
की तरह हो जाऊँगा। 8 तब पलिश्ती सरदारों ने वैसी ही
तांत लेकर दलीला को दी। दलीला ने उसे उन से बाँध दिया।
9 वहाँ उसके पास कुछ लोग पहले ही से ताक में बैठे थे। तब
वह बोल उठी," शिमशोन, पलिश्ती तुम्हारे खून के प्यासे
है।" शिमशोन ने तांतो को ऐसे तोड़ डाला, जैसे कि कोई सन
की रस्सी को तोड़ डालता है। इसके बाद भी वे लोग उसकी
ताकत का राज न जान पाए। 10 तब दलीला शिमशोन मोन
से बोली, " तुम ने मुझे धोखा दिया है, लेकिन अब सच-सच
बता दो कि तुम इतने ताकतवर कैसे हो?" 11 तब उसका
जवाब यह था कि कभी इस्तेमाल न हुयी रस्सियों से उसे
बान्धे जाने पर उसकी शक्ति कम हो जाएगी और वह दूसरो
लोगों की तरह हो जाएगा। 12 तब दलीला ने नई रस्सियों से
उसे बान्धा, लेकिन इस बार भी उस ने धागे की तरह तोड़
डाला। 13 फिर से दलीला की शिकायत यह थी कि वह उस से
दगाबाज़ी कर रहा है। इस बार शिमशोन ने बतलाया कि यदि
उसके सिर की सातों लटें ताने में बुनी जाएँ, तो उसे बान्धा
जा सकता है। 14 इसलिए उस ने शिमशोन को खूँटी से जकड़
दिया। जैसे ही उस ने पलिश्तियों को सतर्क किया और वह
नींद से चौंक कर जाग गया और सब कुछ खूँटी सहित उखाड़
डाला। 15 तब दलीला ने कहा, "तुम झूठ-मूठ कहते हो कि मैं
तुम्हें चाहता हूँ। तुम ने तीन बार मुझे धोखा दिया और सच्चाई
नहीं बतायी" 16 आने वाले कई दिनों तक दलीला ज़िद्द करती
रही और उसके नाक में दम कर डाला। 17 तब एक दिन उस
ने सारा भेद खोलते हुए कहा, "मैं बचपन से परमेश्वर का
नाज़ीर हूँ। मेरे बाल कभी भी काटे नहीं गए। यदि मेरे बाल
काट डाले जाएँ तो मेरा बल खतम हो जाएगा।" 18 दलीला
ने पलिश्तियों के सरदारों को बुलवा लिया, क्योंकि अब उसे
गुप्त भेद मालूम हो गया था। वे लोग अपने साथ पैसा भी
लाए थे। 19 एक दिन दलीला ने उसे अपने घुटनों पर सुला
दिया और एक आदमी को बुलवाकर उसका सिर मुण्डवा
दिया और शिमशोन की ताकत जाती रही। 20 तब वह बोली,
"पलिश्ती तुम्हारी जान के पीछे पड़े है।" वह अभी तक नहीं
जानता था, कि उसके पास अब वह ताकत नहीं है। 21 तब
पलिश्तियों ने उसकी आँखें फोड़ डालीं। वे उसे अज्जा ले गए

और पीतल की जंजीर से बांध दिया। जेल में उसे चक्की चलाने का काम भी उन्हों ने उसे दे दिया। 22 इसी बीच उसके सिर में फिर से बाल आने लगे। 23 पलिश्तियों के सरदार अपने देवता के लिए जश्न मनाने इसलिए इकट्ठे हुए क्योंकि उनका विश्वास था कि दागोन देवता ने उन्हें शिमशोन पर विजय दिलायी थी। 24 उसे देखकर वे दागोन की बड़ाई करते हुए कहने लगे कि हमारे दुश्मन को जिसने बहुतों को हताहत भी किया था, हमारे वश में कर दिया। 25 काफी मगन हो जाने के बाद वे बोले, " शिमशोन को हमारे बीच तमाशा करने के लिए बुलवाया जाए। वहाँ आने के बाद वह खम्भों के बीच खड़ा होकर तमाशा करने भी लगा। 26 तब शिमशोन ने उसका हाथ पकड़ने वाले लड़के से कहा," जिन खम्भों पर यह घर टिका हुआ है वहाँ मुझे ले चलो, ताकि मैं सहारा ले सकूँ। 27 वहाँ शिमशोन का तमाशा देखने वाले लगभग तीन हज़ार लोग थे। 28 शिमशोन परमेश्वर से गिड़गिड़ाया, "प्रभु मुझे ताकत दें, ताकि मैं पलिश्तियों से अपनी आँखों का बदला ले सकूँ।" 29 तब उस ने उन खम्भों पर जोर लगाया जिन पर इमारत टिकी हुयी थी। 30 वह बोला, "पलिश्तियों के साथ मैं भी अपनी जान दिए देता हूँ।" वह इमारत धड़ाम से गिर पड़ी और उस दिन इतने लोग मर गए, जितने उस ने अपने जीवन भर नहीं मारे थे। 31 शिमशोन के भाई और परिवार के दूसरे लोग आए और उठाकर ले गए। उसे सोरा और एशताओल के बीच उसके पिता की कब्र में दफ़नाया गया। इस तरह उस ने 2 साल तक इस्राएल का इन्साफ़ किया।

17 1 एप्रैम के पहाड़ी इलाके में मीका नाम का एक आदमी था। 2 उस ने अपनी माँ से कहा, "ग्यारह सौ चाँदी के जो टुकड़े तुम से ले लिए गए थे और जिनके बारे में तुम ने शाप दिया था, वे मेरे पास हैं।" उसकी माँ बोली,"मेरे बेटे पर परमेश्वर की आशीष रहे।" 3 वे चाँदी के टुकड़े उसे मिलने पर उस ने कहा,"मेरी कामना यह है कि इस चाँदी से दो मूर्तियों बनायी जाएँ, एक ढालकर और दूसरी खोदकर। ये मूर्तियाँ तुम्हारे लिए परमेश्वर को अर्पित की जाएँगी। 4 और ऐसा किया भी गया तथा वे मूर्तियाँ मीका के घर ही पर रहीं। 5 मीका के पास एक देवस्थान था। उस ने एक एपोद और तमाम गृहदेवता बनवाए। उस ने अपने बेटे का संस्कार किया और उसे पुरोहित करके ठहरा दिया। 6 इस समय इस्राएल में कोई राजा शासन नहीं कर रहा था। इसलिए लोग अपने मनमर्जी से जी रहे थे। 7 उन दिनों में यहूदा के कुल का एक नवजवान लेवी यहूदा के बेतलेहेम में परदेशी की तरह रह रहा था। 8 वह वहाँ से निकल पड़ा कि कही और ठिकाना पा सके। चलते-चलते वह मीका के घर पर आ पहुँचा। 9 मीका ने उस से पूछा, "तुम कहाँ से आए हो?" उस ने जवाब में कहा कि वह यहूदा के बेतलेहेम से आया है और एक ठिकाना ढूँढ रहा है। 10 मीका ने कहा,"तुम मेरे साथ रहो और मेरे लिए पिता और पुरोहित बन जाओ। मैं तुम्हें हर साल दस टुकड़े रूपे, एक जोड़ा कपड़ा और खाने की चीजें दूँगा। 11 उस ने यह बात स्वीकार कर ली 12 तब मीका ने उस जवान का संस्कार किया और वह पुरोहित होकर मीका के घर में रहने लगा। 13 मीका की सोच यह थी कि परमेश्वर का आशीर्वाद उसको इसलिए मिलेगा क्योंकि उस ने एक लेवीय को पुरोहित बना कर रखा है।

18 1 एक समय था जब इस्राएलियों का कोई राजा नही था। तभी दान के कबीले के लोग रहने के लिए जगह ढूंढ रहे थे, क्योंकि इस्राएली गोत्रों के बीच उनको उस समय तक उनका हिस्सा न मिला था। 2 तब दानियों में से पाँच ताकतवर आदमियों को सोरा और एश्ताओल से देश की जासूसी करने और देखभाल के लिए भेजा। वे लोग वहाँ जाकर मीका के घर के पास ठहर गए। 3 जब वे मीका के घर के पास आए, तब उस जवान लेवीय की आवाज़ पहचानी और मुड़कर सवाल किया,'यहाँ तुम्हें लाया कौन है, तुम यहाँ करते क्या हो और तुम्हारे पास है क्या?" 4 वह उन से बोला "मीका मेरे साथ नौकर सा बर्ताव कर रहा है, जब कि उस ने मुझे अपने यहाँ पुरोहित करके रखा है।" 5 वे बोले,"परमेश्वर से मालूम करके बताओ कि हमारी यात्रा कामयाब होगी या नही। 6 पुरोहित ने कहा,"बेधड़क अपनी यात्रा जारी रखो, परमेश्वर की आँखे तुम्हे देख रही है।" 7 तब वे लोग चल दिए। लैश में उन्हों ने देखा कि वे सीदोनियों की तरह बिना किसी डर के चैन से जिन्दगी बिता रहे है। वहाँ के अधिकारी किसी में रोक-टोक नहीं करते हैं। ये लोग सीदोनियों से दूर रहते है और दूसरे लोगो से कोई किसी तरह का व्यवहार नहीं रखते हैं। 8 तब वे सोरा और एश्ताओल, अपने भाईयों के पास गए जहाँ उन के भाईयों ने पूछा,"तुम क्या खबर लाए हो।" 9 वे बोले, "आओ हम उन लोगों पर हमला बोल दें, क्योंकि हमने उस देश को बहुत अच्छा पाया है।" तुम खामोश क्यों हो? उस देश पर अपना अधिकार करने में आलस मत दिखाओ। 10 वहाँ पहुँचने पर तुम देखोगे कि लम्बा-चौड़ा देश है और वह बिना डर के लोग रह रहे है। उसे परमेश्वर तुम्हारे लिए अलग कर चुके हैं। वह ऐसी जगह है, जहाँ किसी भी चीज की कमी नहीं है। 11 तब सोरा और एशताओल से दानियों के कुल के छः सौ लोगों ने हथियारों से लैस होकर चलना शुरू किया। 12 यहूदा के किर्य्यत्यारीम नगर में उन्हों ने तम्बू गाढ़ दिए। इसलिए उस जगह का नाम महनेदान पड़ गया। 13 वहाँ से वे आगे

बढ़े और मीका के घर आए। 14 तब पाँच वे लोग जो लैश की
जासूसी करने गए थे, अपने भाईयों से कहने लगे,"क्या तुम्हे
मालूम है कि इन घरों में एक एपोद, तमाम गृहदेवता, एक
खुदी हुयी और एक ढली मूरत है। इसलिए तुम फैसला करों
कि क्या करना है। 15 वे मुड़े और जवान लेवीय के घर पहुँचे
जो मीका का घर था। उन्हों ने उसका हाल चाल पूछा। 16 छः
सौ दानी पुरूष फाटक में हथियार लिए हुए खड़े रहे। 17 पाँच
भेदिए वहाँ घुसे और मूरतें, एपोद और गृहदेवताओं को ले
लिया। वह पुरोहित फाटक में हथियार बान्धे छः सौ लोगों
के साथ खड़ा था। 18 जैसे ही पाँच आदमी मीका के घर में
से यह चीजें ले आए, पुरोहित ने सवाल किया,"तुम यह सब
क्या कर रहे हो।" 19 वे बोले,"खामोश। हमारे साथ तुम चलो
और हमारे लिए पिता और पुरोहित बन जाओ। तुम्हारे लिए
भला क्या है? यह कि एक ही आदमी के घराने का पुरोहित हो
या यह कि इस्त्राएलियों के एक गोत्र और कुल के पुरोहित हो
जाओ। 20 यह सुनकर पुरोहित खुश हुआ। इसलिए वह एपोद,
गृहदेवता और खुदी हुई मूरत की लेकर उन के साथ चला
गया। 21 मुड़कर उन्हों ने बालबच्चों, जानवरों और सामान को
अपने आगे किया और चल पड़े। 22 जब वे मीका के घर कुछ
दूरी तक पहुँचे थे, तभी मीका के घर के निकट रहने वालों
ने मिल कर दानियों को धर दबोचा। 23 और दानियों को
पुकारा, तब उन्हों ने मुँह फेर कर मीका से कहा,'तुमें हो क्या
गया है कि इतने ढेर से लोगों को साथ लेकर आए हो? 24 वह
बो ाला, "तुम तो मेरे बनवाए हुए देवताओ और पुरोहित को
ले आए हो, फिर मेरे पास रहा ही क्या है? फिर ऐसा प्रश्न
क्यों कर रहे हो?" 25 दानियों ने उस से कहा, "हम लोगों के
बीच तुम्हारी आवाज़ सुनने तक न आए। कहीं ऐसा न हो कि
गुस्सेल व्यक्ति तुम पर हमला कर दे और तुम व तुम्हारे घर
के लोगों की जान चली जाए। 26 तब दानी लोग चल दिए।
मीका यह देखकर कि वे मुझ से ज्यादा ताकतवर हैं, वापस
लौट आया। 27 और वे मीका की बनायी हुये चीजों और उसके
पुरोहित को साथ लेकर लैश पास आए। वहाँ के लोग शान्ति
से और बिना डर के रहा करते थे। उन्हों ने उनको तलवार से
मौत के घाट उतार दिया, और नगर को आग से जला डाला।
28 वहाँ कोई बचानेवाला न था, क्योंकि वह सीदोन से दूर
था। 29 उस नगर का नाम दान रख दिया जब कि पहले उस
का नाम लैश था। 30 दानियों ने उस खुदी हुई मूर्ति को खड़ा
किया। देश की गुलामी योनातान और उसके वंश के लोग दान
गोत्र के पुरोहित बने रहे। 31 परमेश्वर का भवन जब तक
शीलो में बना रहा, तब तक मीका की मूरत बनी रही।

19 1 वह समय था जब इस्त्राएलियों के पास कोई राजा
नही था। उसी वक्त एक लेवीय एप्रैम के पहाड़ी देश
की दूसरी ओर एक परदेश की तरह रहा करता था। उस के
पास एक सुरैतिन थी। 2 यह महिला व्यभिचार के बाद अपने
पिता के यहाँ गयी और चार महीने वहीं थी। 3 तब उसका पति
अपने दो नौकरों और दो गदहे लेकर उसके यहाँ चल दिया। वह
उसे समझा कर वापस लाना चाहता था। उस महिला ने उन्हें
अपने पिता से मिलवाया। ईनाम देखकर तो महिला का पिता
बहुत खुश हो गया था। 4 उस ने उन सभी को तीन दिन तक
रोके रखा। 5 चौथे दिन बड़े सवेरे वे उस जगह को छोड़ने वाले
थे। तब महिला का पिता अपने दामाद से बोला, "थोड़ा खा पी
लो, फिर जाना। 6 महिला के पिता ने एक दिन और उसे टिक
जाने के लिए बिनती की। 7 उस ने जाने का मन बना लिया
था, लेकिन दबाव में आकर एक रात और टिक गया। 8 पाँचवे
दिन सवेरे जब वह चलने की तैयारी में था, महिला के पिता ने
शाम ढलने तक फिर रूक जाने को कहा। फिर उन लोगों ने
खाना खाया। 9 जब वह व्यक्ति अपनी सुरैतिन तथा नौकरों के
साथ फिर निकलने पर था तब महिला के पति ने कहा कि दिन
ढल रहा है, इसलिए रात यहीं बिताओ। 10 लेकिन उस रात
यह पुरूष रूका नही और अपने नौकरों तथा सुरैतिन को लिए
हुए चल दिया और यरूशलेम पहुँचा। 11 जब वे यरूशलेम
के पास ही थे, नौकर बोले, "रात हो रही है हम यहीं ठहर
जाते हैं।" 12 मालिक ने जवाब दिया, "पराए नगर जहाँ कोई
इस्त्राएली नहीं रहता है, हम नहीं ठहरेंगे, लेकिन गिबा तक
चलते जाएँगे।" 13 फिर उस ने सेवक से कहा, "चलो हम गिबा
या रामा में रात गुजारें।" 14 गिबा के पास पहुँचते-पहुँचते
सूरज डूब गया था। इसलिए वे वही भीतर चौक में बैठ गए।
किसी ने भी उन्हें अपने घर में नहीं रखा। 15 गिबा के निवासी
बिन्यामीनी थे। 16 वहीं एक बुज़ुर्ग परदेशी खेत पर काम करके
वापस जा रहा था। 17 इन लोगों को चौक में बैठा देखकर उस
ने पूछताछ की। 18 उस ने उस से कहा, "हम बेतलेहेम से आए
हैं और पहाड़ी देश के दूसरी ओर जा रहे हैं। वहीं का मैं हूँ भी
और याहवे के भवन को जा रहा हूँ। यहाँ तो कोई भी अपने
घर में टिकाने को राज़ी नहीं हैं। 19 हमारे पास खाने के लिए है
और गदहों के लिए पुआल भी। हमें किसी से कुछ नहीं चाहिए।
20 वह बुज़ुर्ग बोला, "तुम्हारा कल्याण हो। तुम रात चौक में
नहीं बिताओगे, मेरे संग रहोगे।" 21 तब वे सभी उसके घर
गए। हाथ पैर धोने के बाद खा पी रहे थे और गदहीं को उस
ने चारा भी दे दिया था। 22 तभी वहाँ के पुरूषगामि ायों ने
घर को घेर लिया और कहा, "अपने मेंहमान को बाहर करो
हम भी उसके साथ यौन सम्बन्ध करेंगे।" 23 बुज़ुर्ग आदमी ने
कहा, "कृपया मेरे मेंहमान के साथ ऐसा गंदा काम मत करो।"

24 मेरे पास एक कुवाँरी बेटी है और उस व्यक्ति की सुरैतिन
भी है। उन दोनों को मैं बाहर ले आता हूँ। उन के साथ जो तुम
चाहो करो, लेकिन इस आदमी के साथ ऐसा गलत काम मत
करो। 25 जब लोग मानने के लिए राजी न हुए तो सुरैतिन को
पकड़कर बाहर लाया गया। रात भर लोग उसके साथ बुरा
व्यवहार करते रहे और सुबह बाहर कर दिया। 26 यह महिला
उस व्यक्ति के घर के दरवाज़े पर जाकर पड़ी रही जहाँ उसका
पति था। रोशनी होने तक वह वहीं पड़ी रही। 27 सुबह जब
उसका पति घर से बाहर आया तो अपनी सुरैतिन को हाथ
फैलाए पड़े देखा। 28 वह बोला, "चलो अब चलते हैं।" लेकिन
महिला की आवाज़ न निकली। तब उस पुरूष ने सुरैतिन को
गधे पर लादा और अपने घर के लिए चल पड़ा। 29 घर पहुँचने
पर उस ने उस लाश के बारह टुकड़े करके इस्राएल देश में भेज
दिए। 30 यह सब देखकर लोगों ने आपस में कहा, "मिस्र की
गुलामी से निकल कर आने के बाद आज तक ऐसा कभी नहीं
हुआ और न ही ऐसा देखा गया। इस विषय पर सोच विचार
करना चाहिए।

20 1 तब दान से लेकर बेर्शेबा तक के सभी इस्राएली
और गिलाद के लोग मिस्पा में याहवे के सामने
इकट्ठे हुए। 2 इस में प्रजा के मुखिया तथा चार लाख तलवार
चलाने वाले सिपाही थे। 3 बिन्यामीनियों को मालूम पड़ा
कि इस्राएली मिस्पा में इकट्ठे हुए हैं। इस्राएलियों ने उस
पुरूष से पूछताछ शुरू की। 4 लेवीय पति ने बताया,"मैं अपनी
सुरैतिन के साथ गिबा में ठहरने गया था। 5 गिबा के आदमियों
ने हम पर हमला बोल दिया। वे मुझे मार डालना चाहते थे।
मेरी सुरैतिन के साथ उन्हों ने इतना बलात्कार किया, कि
उसकी जान ही चली गई। 6 तब मैंने उसकी लाश के बारह
टुकड़े भेजकर और इस्राएल में इस बुरे काम का एलान कर
दिया। इस्राएलियों ने तो सचमुच यह दुष्ट काम किया था। 7 हे
इस्राएलियो, सुनो और देखो और अपनी सलाह दो। 8 तब सब
ने एक मन होकर कहा,"हम में से कोई भी अपने घर नहीं
जाएगा। 9 अब हम चिट्ठी उठाएँगे और गिबा पर हमले की
तैयारी शुरू करेंगे। 10 सब इस्राएली गोत्रों में से दस, और दस
हज़ार में से एक हज़ार आदमियों को अलग किया जाएगा।
वे लोग फ़ौज को खाना पहुँचाएँगे। और हम लोग गिबा से
बदला लेंगे।" 11 इस तरह से सभी एक मन होकर इकट्ठे हो
गए। 12 इस्राएली गोत्रियों ने बिन्यामीन के सारे गोत्रियों में
कुछ को पूछने भेजा कि उन्हों ने यह कैसा काम कर डाला।
13 यह भी कि उन कुकर्मियों को सज़ा के लिए हमें दो, ताकि
इस्राएल से बुराई को निकाला जाए।। लेकिन बिन्यामीनियों
ने इस्राएलियों को इस बिनती को सुनने से इन्कार कर दिया।
इसके विपरीत वे इस्राएलियों से लड़ने के लिए तैयार हो
गए। 14 इस्राएलियों से लड़ने बिन्यामीनी गिबा में इकट्ठे हुए।
15 उस दिन गिबावासी सात सौ लोगों के अलावा तलवार
चलाने में माहिर दूसरे नगरों से आए बिन्यामीनी कुल
मिलाकर छब्बीस हज़ार लोग थे। 16 सात सौ बैहत्थे, गोफन
चलाने में माहिर थे। 17 बिन्यामीनियों के अलावा इस्राएली
पुरूष ऐसे थे जो तलवार चलाने में तेज थे। 18 बेतेल जाकर
इस्राएलियों ने परमेश्वर से सलाह माँगी कि बिन्यामीनियों
पर कौन हमला करे। याहवे ने बतलाया कि यहूदा पहल करे।
19 सुबह के समय इस्राएलियों ने गिबा के सामने तम्बू गाढ़
दिए। 20 मुकाबले के लिए दोनों ही आमने सामने आ गए।
21 तब बिन्यामीनियों ने बाईस हज़ार इस्राएलियों को मौत
के घाट उतार डाला। 22 लेकिन इस्राएलियों ने हिम्मत नही
हारी। 23 वे परमेश्वर के सामने गिड़गिड़ाते रहे। फिर से याहवे
ने उन्हें लड़ने के लिए अगुवाई की। 24 दूसरे दिन इस्राएली
फिर से बिन्यामीनियों का मुकाबला करने पहुँचे। 25 उस दिन
भी अठारह हज़ार इस्राएली हताहत हुए। 26 इस्राएली बेतेल
गए। उपवास किया और रोते रहे। वहीं उन्हों ने होमबलि
और मेलबलि की। 27 वाचा का बक्सा, तब वहीं था और फिर
परमेश्वर से सलाह मांगी गई। 28 पीनहास जो हारून का
पोता और एलीआज़ार का बेटा था, उन दिनों बक्से के सामने
उपस्थित रहा करता थे। पूछने पर याहवे ने बिन्यामीनियों
से लड़ते की इजाज़त दी। उन्हें जीत का आश्वासन भी दिया
गया। 29 इस के बाद इस्राएलियों ने गिबा के चारों ओर लोगों
को बैठा दिया 30 तीसरे दिन फिर घमासान हुआ। 31 इस
समय केवल तीस इस्राएली मारे। 32 बिन्यामीनी कहने लगे,
"पहले की तरह वे लोग मारे जा रहे हैं।" लेकिन इस्राएली
बोले, "हम उन्हें खींचकर सड़क पर लाएँगे।" 33 तब सभी
इस्राएली पुरूषों ने बालतामार में पांति बान्धी। तभी छुपे हुए
इस्राएली अपने मारे-गेवा से अचानक निकल आए। 34 तब
दस हज़ार इस्राएली सामने आए और घमासान युध्द छिड़
गया। 35 तब याहवे ने बिन्यामीनियों को इस्राएल से हरवा
दिया। उस दिन पच्चीस हज़ार एक सौ बिन्यामीनी मारे गए।
36 बिन्यामीनियों के हारने के बाद गिबा के पास बैठाए गए
घातक भी चले गए। 37 इन घातकों ने गिबा पर झपट्टा मारा
और आगे बढ़कर पूरे नगर के लोगों को मारा। 38 इस्राएली
लोगों और घातकों ने जिस निशान को ठहराया था वह तो धुएँ
का खम्भा था। 39 इस्राएली पीछे हटने लगे, तो बिन्यामीनियों
ने यह कहकर कि ज़रूर वे पहली लड़ाई की तरह हम से हार
रहे हैं, इस्राएलियों को मारने लगे। इस तरह तीन आदमी
वहाँ मारे गए। 40 बिन्यामीनियों ने जब पीछे मुड़कर देखा तो
आसमान में धुआँ उठ रहा था। 41 तभी इस्राएली पीछे घूमें,

जिन्हें देखते ही बिन्यामीनी किसी मुसीबत से डर कर घबरा गए। 42 इसलिए उन्हों ने इस्राएलियों को पीठ दिखाई और जंगल के रास्ते को अपना लिया। इसी बीच लड़ाई जारी रही और जो दूसरे नगरों से आए थे, उनको इस्राएली रास्ते ही में मारते गए। 43 उन्हों ने बिन्यामीनियों को घेर लिया और उन्हें खदेड़ा। वे मनूहा में गिबा के पूरब की ओर तक उन्हें लताड़ते रहे। 44 अठारह हज़ार ताकतवर बिन्यामीनी मारे गए। 45 तब वे घूमकर जंगल में रिम्मोन चट्टान की तरफ़ भाग गए। लेकिन इस्राएलियों ने उन्हें सड़कों पर चुन-चुन कर मारा। गिदोम तक पीछा करते हुए उन्हों ने दो हज़ार लोगों को मार डाला। 46 उस दिन पच्चीस हज़ार तलवार चलाने वाले मारे गए। 47 छैः सौ लोग घूमें और जंगल की ओर दौड़े। वे रिम्मोन नाम चट्टान पहुँचे। वे लोग चार महीने तक वहीं रहे। 48 फिर से इस्राएली लौटे और बिन्यामीनियों पर लपटे। उन्हों ने इन्सानों और जानवरों दोनों ही को न छोड़ा। सारे नगरों को उन्हों ने आग से जला डाला।

21 1 इस्राएली पुरूषों ने मिस्पा ने यह कसम खायी थी, " हम बिन्यामीनियों के साथ शादी से सम्बन्धित कोई व्यवहार न रखेंगे। 2 बेतेल जाकर वे लोग फूट-फूटकर रोते रहे। 3 वे कह रहें थे, "हे ईस्राएल के परमेश्वर याहवे, एक गोत्र हमारा कम हो गया है। आखिर ऐसा हुआ क्यों। 4 दूसरे दिन उन्हों ने वेदी बनाकर होमबलि और मेलबलि चढ़ायी। 5 तब इस्राएलियों ने सवाल किया, "कौन सा गोत्र सभा में उपस्थित न था?" उन्हों ने तो पक्का प्रण किया था कि जो कोई मिस्पा में याहवे के पास नहीं आएगा, वह मार डाला जाएगा। 6 तब इस्राएलियों को पछतावा हुआ कि उन्हों ने एक गोत्र खो दिया है। 7 वे बोले, हमने शपथ तो खा ली है कि हम उन के साथ वैवाहिक सम्बन्ध नहीं रखेंगे लेकिन हमारे लड़कों को लड़कियों की ज़रूरत है। 8 जब उन्हों ने पूछा कि इस्राएल के गोत्रों में से कौन है जो मिस्पा (याहवे के लिए आराधना के स्थान) में नहीं गया। तब मालूम पड़ा कि गिलादी याबेश से कोई भी नही आया था। 9 गिनती करने पर यह बात सच भी निकली। 10 इसलिये यह तय किया गया कि गिलादी याबेश के सभी लोगों को बर्बाद किया जाए, 11 और सभी पुरूषों को और उन महिलाओं को जिन्होंने पुरूष का मुँह देखा हो, उन्हें मार दिया जाए। 12 वहाँ उन्हें चार सौ जवान कुमारियाँ मिलीं, जिन्होंने पुरूष का मुँह नहीं देखा था। इन लड़कियों को वे कनान देश के शीलो में ले आए। 13 तब पूरी मण्डली ने उन बिन्यामीनियों के पास जो रिम्मोन चट्टान पर थे, संदेश भेजा ताकि मेंल किया जा सके। 14 उसी समय बिन्यामीनी लौट गए। उन्हें वे स्त्रियाँ दी गयीं जो गिलादी याबेश की स्त्रियों में से छोड़ी गई थीं, लेकिन उनकी संख्या फिर भी कम ही थी। 15 तब उन्हें दुख हो रहा था, कि एक गोत्र उन्हों ने खो दिया। 16 तब बुज़ुर्ग लोग बोले, "जिन पुरूषों की पत्नियाँ नहीं रहीं, उन पुरूषों के लिए क्या इन्तज़ाम होना चाहिए?" 17 फिर वे बोले, बचे हुए बिन्यामीनियों के लिए हिस्सा ज़रूरी है, ताकि इस्राएल का एक गोत्र खो न जाए। 18 लेकिन हम अपनी कोई बेटी ब्याह में न दे सकेंगे क्योकि इस्राएली इस बात की कसम खा चुके हैं कि वह व्यक्ति सज़ा पाए, जो किसी बिन्यामीनी से अपनी लड़की की शादी करवाए। 19 फिर वे बोले, "शीलो में हर साल याहवे के लिए त्यौहार मनाया जाता है। 20 इसलिए बिन्यामीनी लोगों को वहाँ जाकर अंगूर के बगीचे में बैठ कर घात लगाना चाहिए। 21 वहाँ बैठकर देखते रहो। जैसे ही शीलों की लड़कियाँ नाचने आएँ, तुम अपने लेकर वापस अपने देश चले जाना। 22 जब उन के पिता या भाई हमसे झगड़ा करने आएँगे, तब हम उन से कहेंगे, कि वे हम पर कृपा करें और महिला दें, क्योंकि युध्द के समय हमने उन में से प्रत्येक के लिए एक महिला नहीं बचाई थी। उस समय तुम ने उनका विवाह नहीं किया, नहीं तो तुम अब दोषी ठहरते। 23 यह सुनकर बिन्यामीनियों ने वैसा ही किया। उन्हों ने अपनी गिनती के मुताबिक नाचने वालियों में से अपने लिए पत्नियाँ कर ली। बाद में वापस अपने बसने की जगह आ गए। 24 उसी वक्त इस्राएली वहाँ से अपने गोत्र और परिवार में आ गए। 25 इस समय इस्राएल में कोई राजा राज्य नहीं कर रहा था। लोग अपनी मनमानी कर रहे थे।